ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



15 जून 2003

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 7

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

आचार्य श्री सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज
(पावन अवतरण दिवस
५ जुलाई २००३)



नमः टेऊँरामाय ॐ श्री सत्नाम साक्षी नमः सर्वानन्दाय

महाकुम्भ पर्व

नासिक त्र्यम्बकेश्वर तीर्थ क्षेत्र में

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का अन्न क्षेत्र (छावनी)

5 अगस्त (मंगलवार) से 27 अगस्त (बुधवार) 2003 तक

सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 107 वाँ जन्मोत्सव

22 अगस्त (शुक्रवार से) 26 अगस्त (मंगलवार) 2003 तक

देखो प्रेमी आयके, नासिक तीर्थ स्थान।
कुम्भ स्नान सत्संग से, अपना करो कल्याण।।
कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग।
कहे टेऊँ जिसके किये, होवे भव दुख भंग

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातनधर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से त्र्यम्बकेश्वर तीर्थ क्षेत्र में महाकुम्भ मेला मंगलवार 5 अगस्त से बुधवार 27 अगस्त 2003 तक की श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराजकी अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। इस बीच हरिद्वार का सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव भी मनाया जायेगा। आप सब इस महाकुम्भ पर्व में आकर स्नान, सत्संग, सेवा करके मानव जीवन को कृतार्थ

कार्यक्रम

मुख्य स्नान तिथि एवं कार्यक्रम

5-8-2003 मंगलवार	प्रातः प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र आरंभ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भागवत गीता का पाठ प्रारंभ, हवन व ध्वजा वन्दन
8-8-2003 शुक्रवार	एकादशी मुख्य स्नान
12-8-2003 मंगलवार	पूर्णिमा मुख्य स्नान
27-8-2003 बुधवार	अमावस्या मुख्य स्नान

सतगुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव का कार्यक्रम

22-8-2003 शुक्रवार	मेले के पाठ आरंभ, हवन व सत्संग
26-8-2003 मंगलवार	प्रातःकाल सत्संग पाठों का भोग
26-8-2003 मंगलवार	सायंकाल पल्लव पाकर उत्सव का समापन

प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 व सायं 5 से 8 सत्संग एवं प्रातः - सायं भण्डारा होगा

नोट : 1. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टॉर्च एवं छाता जरुर लावें।
2. सोना-गहना व कीमती सामान साथ न लावें।
3. कोई भी माता-बहन अपने पिता, भाई या पुरुष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवे।

सेवा में :
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर-302001
फोन : 0141-2372423, 2372424

पता :
अमरापुर धाम, अढिंढोरी रोड, पंचवटी नाका
महालक्ष्मी सिनेमा के पास, नासिक
फोन : 0253-2513415

गुरु प्रार्थनाष्टक

१. परम पावन गुरु, तेरी हूँ दावन गुरु,
आवन जावन गुरु, मेरा ही मिटाइये।
हम हैं अजान गुरु, आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाइये।।
तरन तारन गुरु, करन कारन गुरु,
विघ्न टारन गुरु, बिगड़ी बनाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

२. परम दयाल गुरु, परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु, ज्योति को जगाइये।
सुन्दर सुचाल गुरु, नित ही निहाल गुरु,
अमर अकाल गुरु, यम से बचाइये।।
गोविन्द गोपाल गुरु, प्रभु प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु, बन्धन छुड़ाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

३. परम उदारी गुरु, परम भण्डारी गुरु,
परम आधारी गुरु, नाम को जपाइये।
पर दुःखी हारी गुरु, पर सुखकारी गुरु,
पर उपकारी गुरु, हरि से मिलाइये।।
नित अवतारी गुरु, शुभ गुणकारी गुरु,
कर रखवारी गुरु, ताप को जलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

४. शाहन के शाह गुरु, सच्चा पातिशाह गुरु,
बिन परवाह गुरु, विपत्ति हटाइये।
बेवाहन वाह गुरु, बेराइन राह गुरु,
गुणन अथाह गुरु, मारग बताइये।।
दया के दर्याह गुरु, दोषन के दाह गुरु,
बख्श गुनाह गुरु, मोहि न भुलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

५. राजन के राज गुरु, सन्त सिरताज गुरु,
महा महाराज गुरु, मोहि अपनाइये।
गरीब निवाज गुरु, राखो मेरी लाज गुरु,
पूरे कर काज गुरु, अज्ञान उड़ाइये।।
भव–जल पाज गुरु, सुखन समाज गुरु,
तारक जहाज गुरु, भव से तराइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

६. ब्रह्म के स्वरूप गुरु, आत्म अनूप गुरु,
अमल अरूप गुरु, द्वन्द्व को गलाइये।
अगध अगाध गुरु, अमर अबाध गुरु,
अचल अनाद गुरु, अभेद बनाइये।।
देवन के देव गुरु, अलख अभेव गुरु,
अटल अखेव गुरु, स्वरूप लखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

७. पूरन सु ज्ञानी गुरु, पूरन सुध्यानी गुरु,
पूरन सुदानी गुरु, प्रेम को पिलाइये।
शरण पालन गुरु, संकट घालक गुरु,
मेरे हो मालिक गुरु, दरस दिखाइये।।
करुणा निधान गुरु, सद महरबान गुरु,
करले कल्यान गुरु, सुमति सिखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

८. निओटन ओट गुरु, काटो भ्रम कोट गुरु,
मेटो यम चोट गुरु, पापन पलाइये।
वीरन के वीर गुरु, धीरन के धीर गुरु,
पीरन के पीर गुरु, शान्ति में समाइये।।
तुनं धन धन गुरु, मैं हूँ तेरा जन गुरु,
मारे मेरा मन गुरु, दोषन दलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

भजन गंगा

भजन

तर्ज : बहे अखियों से धार.............

टेक : मेरे स्वामी टेऊँराम, थे वो सदा निष्काम।
पिलाया प्रेम का जाम-सबको मिलाया भगवान से।।

१. गांव खण्डू में जन्म ले आये – सब भक्तों के कष्ट मिटाये।
जैसे अयोध्या में राम, हुए गोकुल में घनश्याम।।

२. गुरू आसूराम को बनाया, अपने तन को था बहुत तपाया।
सदा मुख में था राम, नहीं जग से कुछ काम।।

३. अखण्ड भोजन भण्डार चलाया, जो भी आया था खूब खिलाया।
आया जो भी सुनकर नाम, पाया आतम विश्राम।।

४. प्रभू मिलने की राह दिखाई, अन्दर अनुभव की ज्योति जगाई।
सर्वानन्द सुखधाम – जपाया साक्षी सत्‌नाम।।

★ सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

भजन

तर्जः अंञा त ऐट मां आहियां नढ़िड़ी............

थलुः जनम लही अज़ु जोग़ी आयो।
टेऊँराम आ नालो जहिंजो, सभजे मन खे भायो।।

१. चेलराम खे ड्रियनि वाधायूं, ब़ार बुढा नर नारियूं।
शहर खण्डूअ जे गलीअ– गलीअ में, ड्राढो आनन्द छायो।।

२. जनम लहण सां थी रोशनाई, अविद्या ऊंदहि वयड़ी ।
सूरज वांगुरू उभिरी जग़ में, कुले अंधकारू मिटायो।।

३. ग्वाल बाल जे कृष्ण जा हुआ, तिनिमां हिकड़ों हीउ भी।
मोहन वांगुरू मुरली वज़ाए, सब खे मस्त बणायो।।

४. जग़ जे तारण खातिर जोग़ी, हुकुम हरीअ सां आयो।
राम नाम जे ब़ेड़े चाढ़े, सारो साथु तरायो।।

५. **शान्ति प्रकाश** चवे हथ जोड़े, ईहो अर्जु अघायो।
सतगुरू पंहिजे चरननि में नितु, मन जो प्रेमु वधायो।।

★ सद्‌गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज

भजन

तर्जः मुहिंजी ब़ेड़ी अथई विच सीर ते..............

थलुः मुंहिजो सतगुरू टेऊँराम आ,
मुंहिंजो तंहिखे नित प्रणाम आ।।

१. जद्‌हिं – जद्‌हिं थे प्रेमिनि पुकारयो, तद्‌हिं अवतार थे धारयो।
जंहिंजो अमरापुर निज धाम आ।।

२. सत्‌नाम साक्षी मन्तरु ड्रेई, सतगुरु तारिया पापी केई।
जंहिंजो दीन दयालू नाम आ।।

३. प्रेम प्रकाशी पन्थ हलायो, उन रस्ते हरि सांणु मिलायो।
जंहिंजो हरि सां मेलणु काम आ।।

४. **शान्ति प्रकाश** गुरु पूरनु आहे, तंहिंजे मटु ब्रियो को भी नाहे।
जंहिंजो आतम में विश्राम आ।।

★ सद्‌गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज

भजन

तर्ज : चली कौन से देश........

टेक : मेरा टेऊँराम गुरुदेव, मनुज बन आया था।

१. कर्म योग को खूब कमाया, मन को मारा तन को तपाया।
जोश जलाया था।।

२. दीपक जैसे जान जलाई, जान जलाकर ज्योति जगाई।
पथ दिखलाया था।।

३. जहाँ रेत के ढेर थे भारी, पशु पंछी की थी वो झारी।
डेरा लगाया था।।

४. भड़क उठी जब द्वेष की ज्वाला, चारों तरफ से घेरा डाला।
ना घबराया था।।

५. जब तेरी झोपड़ी जलने लागी, फिर भी न क्रोध की ज्वाला जागी।
द्वन्द गलाया था।।

६. गीता का सन्देश सुनाया, खाली सुनाया न, करके बताया।
चलके दिखाया था।।

७. न्याय नीति और धर्म कर्म का, सत्य शान्ति और मर्म शर्म का।
पाठ पढ़ाया था।।

८. **हरिदास** कह हरि से जोड़ा, झूठ कपट पाखण्ड को तोड़ा।
सत्य बताया था।।

★ सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

भजन

तर्जः बहे अखियों से धार................

टेकः धरे मनुज अवतार , आए कली में करतार।
बोलो जय जयकार, सतगुरू टेऊँराम की।।

१. अपने जीवन को तपस्वी बनाया, सत्य मार्ग में सबको लगाया।
करी ज्ञान गजकार, भागे संशय सियार।।

२. वचन मीठे सर्व को सुनाया, छल झूठ कपट को हटाया।
शील संयम को धार, मारा क्रोध अहंकार।।

३. नित प्रेम का पाठ पढ़ाया, सभ जीवों का द्वेष उड़ाया।
देके विवेक विचार, मेटा मन का विकार।।

४. धारी हदय सहारन शक्ती , करी पूरन हरी की भक्ती।
हरिदास हरवार, जाऊँ बलि – बलिहार।।

★ सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

भजन

तर्जः जब तुम ही चले परदेश...............

थलुः मुहिजा सतगुरू दीन दयाल, सदा कृपालु टेऊँराम प्यारा।
वञां तोतां ॿलि ॿलिहारा।।

१. छद्रे शहर वैराॻु वसायो तो, झंगल खे मंगल बणायो तो।
सर्दीअ ऐं गर्मीअ जा तो कया सहारा।।

२. तो अन्तर्मुख अभ्यास कयो, ऐं काम क्रोध खे नासु कयो।
तो ध्रुव भॻत जियां ध्यान धरियो दातारा।।

३. तूं व्यास मिसल विद्वान हुएं, गुण ज्ञान हूंदे निर्मान हुएं।
तो में भॻतीअ शक्तिअ जा त हुआ भण्डारा।।

४. तो ओम जो जाप जपायो हो, ऐं भिन्न–भिन्न अर्थ ॿुधायो हो।
ड्रेई **गुरूमुख** ज्ञान संदा तूं वियें त इशारा।।

★ स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज

भजन

तर्जः संसार है इक नदिया.........................

टेकः मेरे सत्गुरू टेऊँराम, तुम्हें बार-बार प्रणाम।
तेरे चरणों में आकर, मेरे मन को मिले आराम।।

१. तेरी महिमा है न्यारी, तुम भक्तनि हितकारी।
तेरी दिव्य कृपा दृष्टी,अदभुत मंगलकारी।
दीनों का दुःख हरे, है पावन तेरा नाम।।

२. तुम दीनो के दाता, निर्बल के सहारे हो।
भक्तों के भयहारी, प्राणों से प्यारे हो।
श्रद्धा से जो नमन करे, बन जाए बिगड़े काम।।

३. शरणागत होकर जो , तेरा लेता है आधार।
भव सागर दुस्तर से, पल में वो होता पार।
निशदिन जो करे स्मरन, मन्तर साक्षी सत्नाम।।

★ सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज

भजन

तर्जः जीए मुंहिंजी सिंध मां त घोरियां..........

थलुः जन्मु मनायो मिली मौज मचायो, मुंहिंजो सत्गुरू आयो।
सत्गुरू आयो स्वामी टेऊँराम आयो, बाबा खण्डूअ वारो आयो।।

१. सभिनी खे लख लख वाधायूं, जन्मु गुरूअ जो गद्जिी मनायूं।
शहर–शहर में खुशियूं मनायूं, चरणनि में अॼु शीशु निवायूं।।

२. नामु जपाइण सत्गुरू आयो, जीव ईश जो भेदु मिटायो।
धर्मु सनातन झण्डो झुलायो, प्रेम प्रकाशी पंथ बणायो।।

३. घर–घर में अॼु ज्योतियूं जाॻायो, पाण नचो ऐं ॿियनि खे नचायो।
सभिनी जो थियो लायो सजायो, ताड़ियूं वॼायो सब नचो ऐं ॻायो।।

४. देहि धरे दर्वेशनि वारी, आयो सत्गुरू पर उपकारी।
महिमा जंहिंजी सचु पचु न्यारी, **ब्रह्मानन्द** मां वञां ॿलिहारी।।

★ स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

भजन

तर्ज : सत्गुरु साहब सन्त मिलाया..........

थलु : स्वामी टेऊँराम जगत में,
धार लिया अवतारा-सिरजणहारा।

१. ॿालकपण खां जत्ती वैराॻी–भेद भ्रम मोह ममता त्याॻी।
ज्ञानी गुणनि भण्डारा–सिरजणहारा..............

२. खिम्या शील सन्तोष उदारी–दीन दुखियनि जो हो दुखटारी।
अधीननि आधारा–सिरजणहारा..............

३. श्रद्धा सां जे शरनी आया–वेदनि जा तिनि वचन सुणाया।
अनभइ ज्योति उजारा–सिरजणहारा..............

४. **स्वयं प्रकाश** वञां ॿलिहारी–पतित पावन पर उपकारी।
अखण्ड ज्ञान अपारा–सिरजणहारा..............

★ स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज

भजन माला

①

मेरे सत्गुरु टेऊँराम, तेरी शान के सदके।
जो गुप्त खजाना दिया, उस एहसान के सदके।
तू रहमत का खजाना है, तेरा हर दिल दीवाना है।
ऊँची शान है, तेरा रूप कैसा सुहाना है।
फूलों से सजा हुआ है, उस दरबार के सदके।
मेरे सत्गुरु...
तेरे प्रेम ने सब को दीवाना करके छोड़ा है।
जग से तोड़ के नाता तेरे संग नाता जोड़ा है।
किस्मत से जो हुआ है, उस दीदार के सदके।
मेरे सत्गुरु...
झोलियाँ भर गई सबकी कोई खाली न जाता है।
तेरे दरबार जो आए वो ही दीदार पाता है।
तेरी सुन्दर छवि की शोभा, इस दीदार के सदके।
मेरे सत्गुरु...
दासन दासी को तारो, शरण तेरी मैं आई हूँ।
भिक्षा प्यार की दे दो ये आशा मन में लाई हूँ।
तेरी महिमा सुन के आई, जयपुर धाम के सदके।
मेरे सत्गुरु...

दासी
रामप्यारी, हिसार

②

थलु : मेरा दिल तुझपे कुर्बान अमरापुर वाले,
अमरापुर वाले सांवरिया प्यारे,
अमरापुर वाले हारां वाले।

१. नित उठ तुझको भोग लगाऊँ,
माखन मिश्री खूब खिलाऊँ।
तू ही मेरा नन्दलाला अमरापुर वाले,
अमरापुर वाले ओ हारां वाले।।
मेरा दिल.............................।

२ जब दर्शन की प्यास लगे है,
तुम बिन सूना जगत लगे है।
मेरे मन को समझा जा अमरापुर वाले,
अमरापुर वाले, ओ हारां वाले।।
मेरा दिल.........................।

३. जब प्रभु तेरे दर्शन पाऊँ,
झूमूं नाचूं खुशियाँ मनाऊँ।
कभी घर पे मेरे आ जा अमरापुर वाले,
अमरापुर वाले सांवरिया प्यारे।
मेरा दिल तुझपे कुर्बान अमरापुर वाले,
अमरापुर वाले ओ हारां वाले।।

तरुणा रूपेला, पिनगंवा

③

तर्ज : ये रात भीगी भीगी।
थलु : धन-धन खण्डुअ जी नगरी,
धन मुहिंजो आ सांई।
धन मण्डली आ उन्हीअ जी,
जहिं महिमा आ गाई................।।

१. राह रोशन कई दुनिया में अची,
खिली हिकड़ी कली टेऊँराम सची।
कई बाग बहारी, थी हरहँध चौधारी,
दुनियां में आयो हो दुनिया जो वाली।।
धन–धन.....................।

२. थियो गुरु आ जहिंजो आसूराम,
ऐ पिता हुयो जहिंजो चेलाराम।
माता कृष्णा आ प्यारी, भेण ईश्वरी दुलारी,
जहिंजो ममता जे साये में, आयो हो सुखकारी।।
धन–धन.....................।

३. धन सर्वानन्द भी प्यारो आ,
जहिमें शान्ति प्रकाश सोभारो आ।
स्वामी हरिदासराम न्यारो, भगत प्रकाश दुलारो,
धन–धन सजी आ मण्डली।
धन मुहिंजो आ सांई............,
धन–धन खण्डुअ जी नगरी।।

माया प्रेम प्रकाशी, भानुप्रतापपुर

④

सत्गुरु मुहिंजो महरबान

तुहिंजे पिढ़ जा दिलबर असीं पुजारी आहियूं।
रहण तुहिंजे चरणनि में हर वक्त चाहियूं।
सांई टेऊँराम असीं तुहिंजा दास आहियूं।
ओ सांई मदायूं हजारे आहिन असांमें।
कई कूढ़ मन में भरियल असांमें।।
अंहकार सां मन भरियल आ असांजो।
कयो राह रोशन सओं दगु असांजो।।
पल–पल उहाई असीं महर था चाहियूं।
सांई टेऊँराम असीं तुहिंजा दास आहियूं।।
बणी मंगता तुहिंजे दर जा असीं।
बीठा आहियूं कतार में हित असीं।।
तुहिंजे महर जो आ मूंखे इंतजार।
विश्वास आहे त तूं बुधन्दे पुकार।।
विसाईदें मालिक विकारनि जूं बाहियूं।
सांई टेऊँराम असीं तुहिंजा दास आहियूं।।
वरिहन खां आसांऊ आहियूं असीं।
झले झोल वरिहयन खां बीठल असी।।
बधी हथ कयूं वेनती था तोखे सांई।
मथां महिर जो हथ चाहियूं असीं।।
पुजाइ आस मुहिंजी सिकायल आहियूं।
सांई टेऊँराम असीं तुहिंजा दास आहियूं।।
कहिड़ाबि आहियूं असीं तुहिंजा आहियूं।
तव्हां बिन असीं बिये जा न आहियूं।।
कयो महर मूंते थियन कम मुहिंजा।
लाया सजाया थियन सभ मुहिंजा।।
नजर कर दया जी दया तुहिंजी चाहियूं।
सांई टेऊँराम असीं तुहिंजा दास आहियूं।।
सहारो ही आहे सजण सिरफ तुहिंजो।
बियो सजण न समझां को पहिंजो।।
आहिंया सांई तुहिंजो ऐं रहदुंस तुहिंजो।
सजी उमर पियो जपियां नाम तुहिंजो।।
कृपा कर प्यासी इहो वरु था चाहिंयूं।
सांई टेऊँराम असीं तुहिंजा दास आहियूं।।

मिर्चूमल झमटानी 'प्यासी' प्रेम प्रकाशी
बैरागढ़, भोपाल

⑤

।। श्री सद्गुरु टेऊँराम का जीवन।।

हमें कर्तव्य पर चलना सिखाता, टेऊँराम का जीवन।
हमेशा धर्म की और सत्य की राह दिखाता टेऊँराम का जीवन।।
शरण में जो भी आये, उसी की खाली झोलियाँ भर दे।
पुकारे जो हृदय से, पूर्ण उसी की कामना कर दे।।
समूचे भेद सब बन्धन मिटाये, टेऊँराम का जीवन।
पकड़ कर बांह भक्तों को बचाये, टेऊँराम का जीवन।।
हमें....................... .... ।।
कभी जब हम को चारो ओर से, संकट ने घेरा हो।
अंधेरे मार्ग में दीपक जलाए, टेऊँराम का जीवन।
असम्भव को भी झट संभव बनाए, टेऊँराम का जीवन।
हमें...................................... ।।
कभी जीवन में तुम अभिमान के झूले में मत झूलो।
कभी धन–धाम सत्ता के नशे में, गुरु को मत भूलो।
रखो विश्वास बिगड़ी को बनाये टेऊँराम का जीवन।
भटकती नाव को तट पर लगाये, टेऊँराम का जीवन।
हमें कर्तव्य पर चलना सिखाता, टेऊँराम का जीवन।
हमेशा धर्म की और सत्य की राह दिखाता टेऊँराम का जीवन।

दासी
रामप्यारी हिसार

⑥

तर्ज : आओ प्यारा श्रद्धा वारा संतनि जे सत्संग में।
थलु : सत्नाम साक्षी जप तूं प्यारा,
सचो समर खणु सांण तूं........सचो....... ।

१. दुनियां जी दौलत कम न ईन्दइ
साथी सनेही साथ न हन्दइ।
सतनाम साक्षी सहाई थीदों,
हरदम रख ईहो ध्यान तूं...... ।।
सचो समर..................... ।

२. संतनि जो कम नाम जपाईण,
संतनि जो कम हरी मिलाइण।
संतनि जो कम भागु ठाहिण,
खणु गुरनि जो ग्यान तूं......... ।।

सचो समर.................... ।

३. सत्‌नाम साक्षी ध्याय तूं,
जीवन में सुख पाय तूं।
हरदम हिरदय हंडाय तूं,
कढु अंदर मां अग्यान तूं...... ।।
सचो समर.................... ।

४. सत्‌नाम साक्षी आ सुख रासी,
नाम प्रभुअ जो आ अविनाशी।
काटे श्रीचन्द जम जी फासी,
पाय प्रभुअ दर मान तूं ।।
सचो समर.................... ।

श्रीचंद कटारिया (कारंजा)

⑦

दण्डे वारा सत्‌गुरु सांई।
सभजी आस पुजाई बाबल।।

१. पेट भरे जे के पिड़ में आया।
तिनजा कर तूं लाया सजाया।।
सेवा लेखे लगाएँ सत्‌गुरु।
दण्डे वारा............... ।।

२. दुख जा दींह न सत्‌गुरु देखारिजो।
सेवा सुमति जो सबक सेखारिजो।।
मड़ियूं मरज मिटाए सत्‌गुरु।
दण्डे वारा............... ।।

३. झोल झले जे के बीठा थई झाटी।
दुध पुट दीदें मक्खण जी माठी।।
तिनजूं झोलियूं भराएँ सत्‌गुरु।
दण्डे वारा............... ।।

४. अर्ज मोहन जो आहे ईहोई।
अर्ज भगत (रिझूब) जो आहे ईहोई।।
कजो कार्ज रास सभेई।
विछिड़ियल सन्त मिलाए सत्‌गुरु।।
दण्डे वारा............... ।

डॉ. मोहनलाल नन्दलाल, गाँव जीलोता (अलवर)

⑧

तर्ज : मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा मिल............. ।
थलु : तेरे दरबार से उठकर बता गुरुवर कहाँ जाएं,
अगर तू भी नहीं सुनता तो किस के दर पे हम जाएं,
तेरे दरबार........................... ।

१. प्रभु के नाम की रहमत सदा तुम पर बरसती है—२
उसी रहमत की सुन चर्चा तुझे मिलने को हम आए,
अगर तू भी नहीं सुनता.................... ।

२. सुना है तेरी महफिल में शमा उलफत की जलती है—२,
शमा के बनके परवाने यहाँ जलने को हम आए,
अगर तू भी नहीं सुनता.................... ।

३. यहाँ के जर्रे—जर्रे में झलक गुरुवर की मिलती है—२,
उसी झलकी को हम पाने तेरे कदमों में आए हैं,
अगर तू भी नहीं सुनता.................... ।

४. सुना है तेरी चौखट से कोई खाली नहीं जाता—२,
बता क्या दोष है जो खाली हाथ हम जाएं,
अगर तू भी नहीं सुनता.................... ।

सोना बच्छानी, जयपुर

⑨

छोड़कर संसार जब तू जाएगा......२
कोई न साथी, तेरा साथ निभाएगा.........२

१. तुने भजन किया न टेऊँराम का
सत्संग सुना ना दो घड़ियाँ, यमराज पकड़ ले जायेगा।
हाथों में लगा हथकड़ियाँ फिर कौन छुड़ायेगा।
कोई न साथ तेरा साथ निभाएगा............
छोड़कर संसार जब....................

२. इस पेट भरन के खातिर, तूने पाप किये हैं निशदिन,
शमशान में लकड़ी रख कर तुझे आग लगेगी एक दिन।
फिर रो—रो के पछताएगा।
कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा............
छोड़कर संसार जब....................

३. टेऊँराम के चरणों में प्राणी तु, ध्यान लगा ले,
निशदिन कट जायेंगे, फिर तेरे चौरासी वाले फेरे।
कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा............
छोड़कर संसार जब तू जाएगा।।
कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।

श्रीमती रेखा गम्बानी, गोन्दिया

(10)

तर्ज : तूने मुझे बलाया शेरांवालीये,
थलु : सुरति आ लासानी टेऊँराम जी,
झलके छवि नूरानी टेऊँराम जी।
ओ हांरावाले जी, ओ कारावाले जी,
जो जयपुर वारे जी,
सुरति आ.......................।

१. आहे उन्हीअ में ज्योति ईलाही,
शान संदसि आहे शाहनि शाही।
रिद्धियूं सिद्धियूं पाणी भरनि थियूं–२
मूरत आ मस्तानी, टेऊँराम जी,
झलके छवि नूरानी, टेऊँराम जी।
सुरति आ...........................।

२. जो भी उन्हीअ दर आयो सवाली,
कोन सुझे थो को मोटयो खाली।
झोल भरे तिन खूब दियो था–२,
आहे हस्ती लफानी, टेऊँराम जी।
झलके छवि नूरानी, टेऊँराम जी।
सुरति आ...........................।

३. जन्म–जन्म जा जीव दुखायलि,
काल माया जा खूब सतायलि।
ज्ञान देई तिन शांत करी थो–२
वाणी आहे रूबाणी, टेऊँराम जी।
छलके छवि नूरानी, टेऊँराम जी।
सुरति आ...........................।

४. कहिड़े मुख सा महिमा गायां।
तुहिंजे मट ना कहिखे भायां।
उपमा उन्हनि जी आहे निराली–२
सिख्या आहे रूहानी टेऊँराम जी।
झलके छवि नूरानी टेऊँराम जी।
सुरति आ...........................।

श्रीमती राखी वेडवानी, गोदिंया

(11)

इस भजन में पूर्णिमा के चन्द्रमा को गुरुदेव कह रहे है मैं अपने प्रियतम गुरुदेव को छोड़कर तुम्हारे साथ नहीं चलूंगा, यह भजन सदगुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने १८–१६ वर्ष की आयु में बनाया था जो उस समय अति लोकप्रिय था।

**थलुः- माही मेनू लगा प्यारा
खेड़े (चन्द्रमा) नाल न जावसां**

(१) माही मेनू मोह जो लीता,
मन असादा बेबस कीता।
पल पल खड़ी पुकार सां,
खेड़े नाल न जावसां।।

(२) राजस्याला हुण में छोड़या
साथ सजण दे जी में जोड़या
पेर न पोइते पाव सां
खेड़े नाल न जावसां

(३) नाल राझन दे हुण में वैसा
बाजार दे विच होका दैसां
तेड़े गली गली गुण गावसां
खेड़े नाल न जावसां

(४) कह टेऊँ साजण से आया
अँगण असाड़े पैरा पाया
सुरहीं सेज विछावसां
खेड़े नाल न जावसां

रचयिता :- सदगुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज
संकलनः– *श्रीमती मीरादेवी वसणाराम तलरेजा*, मुरैना

भूल-सुधार

इसी अंक के आवरण पृष्ट पर त्रुटिवश वर्ष २३ अंक ७ छप गया है जबकि यह अंक ८ है अतः सुधी प्रेमी पाठक इस अंक को वर्ष २३ अंक ८ ही पढ़ें। त्रुटि के.लिये हम श्रमा प्रार्थी है–व्यवस्थापक,
प्रेम प्रकाश संदेश–ग्वालियर

(12)

तर्ज : तुम दिल की धड़कन में

थलु : सांई दिल में रहदों आ-२
सांई मन में रहदों आ-२
सांई टेऊँराम प्यारो आ
सभजे अखिणिन जो तारो आ
सांई दिल......................

१. सांईअ जे दर ते ईदां रहूँ–२
सांईअ जो नाम जपन्दा रहूँ–२
जे सांई टेऊँराम चवंदा रहूँ–२
सांईअ जो नाम ध्याईंदा रहूँ–२
सांई टेऊँराम प्यारो................

२. रहमत जो सागर आहे–२
सभाजा तो दुखड़ा लाहे–२
सांई सचो भक्तिअ जो
भरयल पाण भडार आ
सांई टेऊँराम प्यारो................

३. सांई शिव जो अवतारी आ–२
दीन्दो नाम जी खुमारी आ–२
संगत ते महर करे–२
भाग उननि जा बणाईन्दो आ–२
सांई टेऊँराम प्यारो................

ज्योति माखीजा, (सिवनी)

(13)

तर्ज :- **बहारों फूल बरसाओं..................**

थलु :- मेरे गुरूवर मेरे रहबर -मेरे भगवान आये हैं।
जैसे सोना के घर चलकर-बाबा टेऊँराम आये हैं।।

१. लगी थी आश सदियों से–हुए हैं आज वो दर्शन
मेरे कष्टों को हरने–स्वयं घनश्याम आये हैं"

२. करूं कैसे तेरी पूजा–न मन फूला समाता है।
कहाँ जाऊँ मैं लाऊँ, समझ कुछ भी न आता है

३. मीठे स्वर से अरी कोयल–सुना संगीत तू अपना
तेरे गीतों को सुनने गुरू महाराज आये हैं"

सोना बच्छानी जयपुर

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कृत

पाँच काम

पाँच काम जीवन को वेग हैं करत जोग,
शत काम छोड़ पहले करे इस्नान जी।
दूजा काम यह करे तामें ढील नाहिं धरे,
छोड़ के सहस्त्र काम पहले खाये खान जी।।
तीजा काम अभिराम करे नित निष्काम,
लख काम छोड़ देवे दीननि को दान जी।
टेऊँ चौथा कोटि काम छोड़ के सत्संग जाय,
पाँचवा सबको छोड़ जपे भगवान जी।।

किशोर कुमार वरजानी, *जयपुर*

श्री अमरापुर स्थान जयपुर

श्री सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का छठी महोत्सव

१० जुलाई २००३, गुरूवार

कार्यक्रम विशेष : सायंकाल ५ से ७ बजे तक भजन संध्या, सत्संग, झूला झाँकी एवं खीर प्रसादी

इसी प्रकार सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर छठी महोत्सव कार्यक्रम मनाया जावेगा।

जन्मोत्सव पर विशेष

अखण्ड ज्ञान के भण्डार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

पाताल लोक से ब्रह्मलोक तक सभी पुनरावृति के लोक हैं पर ब्रह्मलोक नहीं। जो वहाँ जाता है फिर लौटकर वापस इस मृत्युलोक में नहीं आता। जीव का परम लक्ष्य वास्तविक उद्देश्य भी है उस स्थान को प्राप्त करना। उसके इसी लक्ष्य को ही अनेक नामों से अभिव्यक्त किया गया है। आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान, परम शान्ति, परममद, मोक्ष मुक्ति, ब्रह्मा का धाम, परमात्मा का धाम, अक्षर धाम, वैकुण्ठ धाम, श्री अमरापुर धाम आदि। इस अमरापुर धाम को भी जीव केवल इस मृत्यु लोक में ही प्राप्त कर सकता है किसी और लोक में नहीं। कर्म प्रधान यही मृत्यु लोक है कोई और लोक नहीं। जीव ने श्री अमरापुर स्थान के अलावा किसी और लोक की प्राप्ति कर भी ली तो उसको परम् शान्ति की अनुभूति हो सकती नहीं, इसके लिये उसे फिर वापस लौटकर इस लोक में आना पड़ेगा। जिसने उस स्थान को प्राप्त कर लिया उसे फिर कुछ और प्राप्त करना बाकी रहता नहीं। कहा जाता है कि महाप्रलय के समय भी इस लोक का नाश नहीं होता।

हमारे आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने तो अपने पूर्व के जन्मों में ही उस स्थान को प्राप्त कर लिया था। कहा जाता है– वहाँ पर मन में उठने वाली हर इच्छा की पूर्ति होती है जो कोई भी जो चाहता है उसे तुरन्त वही वस्तु पदार्थ मिल जाते हैं– परन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जिनको वहाँ प्राप्त सुख व आनन्द में भी मन नहीं लगता है– दृष्टि उनकी मृत्यु लोक में रह रहे जीवों के उद्धार पर लगी रहती है कि किस तरह वे जन्म जन्मान्तर तक जीवन–मृत्यु के असहाय दुखों के भंवर में फसे हुए हैं। उनमें से ही एक थे हमारे आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज – जो अपने साथ नाम दान का बेड़ा (जहाज) इस मृत्यु लोक में जीवों को भव सागर से तारने के लिये लेकर आये। जन्म की लीला की, प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की स्थापना की व नाम दान ''सत्नाम साक्षी'' की दीक्षा दी। ऐसे थे हमारे आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अखण्ड ज्ञान के भण्डार।

सत्नाम साक्षी से सत्य के दृष्टा बने

'सत्नाम साक्षी' क्या है ? गुरु मंत्र। (नाम) दान अर्थात दीक्षा जो सद्गुरुओं के द्वारा परम्परानुसार पंथ के शिष्यों को दी जाती है। गुरु मंत्र (नाम) का अर्थ क्या होता है ? साधन। जिस पर चढ़कर, बैठकर पंथ का आचार्य (मूल पुरुष) सत्य का दृष्टा बनता है– जिसको जिस साधन के माध्यम से सत्य की अनुभूति होती है वही साधन वह दूसरों को भी अपनाने के लिये कहता है। उनका कहना होता है कि दूसरे साधन से तुम लक्ष्य तक पहुँचो या नहीं पहुँचो इसका मुझे अनुभव नहीं पर जिस साधन से मैं लक्ष्य तक पहुँचा हूँ वहीं मैं तुमको भी बतलाऊँगा और वही उसका गुरु मंत्र भी होता है। लक्ष्य है यदि हमारा (दिल्ली) तक पहुँचना, पाँव–पाँव से जायेंगे तो पाँव हमारा साधन, स्कूटर कार से जायेंगे तो स्कूटर कार हमारा साधन, रेल–जहाज से जायेंगे तो रेल–जहाज हमारा साधन। इस्लाम ने प्रेम को साधन बनाया, ईसा ने सेवा को महावीर, बुद्ध ने अहिंसा को, सिक्ख धर्म ने सत् श्री अकाल को, सनातन धर्म ने सत्य को और हमारे आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने 'सत्नाम साक्षी' को साधन बनाया और इसके माध्यम से ही वे सत्य के दृष्टा बने, सत्य की अनुभूति हुई। तो फिर इस 'सत्नाम साक्षी' का अर्थ क्या है ? गुरु मंत्र (नाम), साधन तो है यह जीव को परम लक्ष्य तक पहुँचाने का – पर इसका अर्थ क्या है ? जो अर्थ आचार्य के भाव के सर्वथा निकट का हो– वह है सत्य का साक्षी। साक्षी के यहाँ दो अर्थ है एक तो गवाह व दूसरा आत्मा– हमारे शास्त्रों में आत्मा को साक्षी शब्द से भी अभिव्यक्त किया गया है। सत्य का साक्षी। यानी जीव की हर क्रिया का गवाह, पर कौन ? प्रकृति के ये अंश– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश, चारों दिशायें, आठों पहर, दिन व रात, सूर्य व चन्द्रमा। प्रकृति के यही अंश हर जीवात्मा के परमात्मा के सामने उसके कर्मों के गवाह होते हैं– इन्हीं प्रकृति के अंशों को ही साधन बनाकर हमारे आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सत्य के दृष्टा बने। हम सभी प्रेम प्रकाशी भी इसी गुरु मंत्र ''सत्नाम साक्षी'' को ही साधन बनाकर अपने परम् लक्ष्य को प्राप्त करें। तब ही कहीं जाकर उनका इस धरा पर अवतरित होना सफल होगा।

प्रीतम प्रेम प्रकाशी, (जयपुर)

पूज्य सद्गुरु महाराज के सत्संग
दर्शन प्रति रविवार संस्कार चैनल
दोपहर ३ से ३.३० तक

संतों की सहिष्णुता

विरले मिलेंगे जगत में, सत्धर्म तारक सद्गुरु।
सत् पथ दिखाए शिष्य को, ऐसे सुधारक सद्गुरु।।

सिन्धी जगत के महान तपोनिष्ठ ब्रह्मज्ञानी संत श्री टेऊँराम जी ने जब अपने चारों ओर समाज में व्याप्त भ्रष्टाचारों को हटाने का प्रयत्न किया, तब अनेकानेक लोग आत्मकल्याण के लिए सेवा में आने लगे। जो अब तक समाज के भोलेपन ओर अज्ञान का अनुचित लाभ उठा रहे थे, समाज का शोषण कर रहे थे। ऐसे असामाजिक तत्वों को तो यह बात पसन्द ही न आई। कुछ लोग डोरा, धागा, ताबीज का धन्धा करने वाले थे तो कुछ शराब, अण्डा, माँस, मछली आदि खाने वाले थे तथा कुछ लोग ईश्वर पर विश्वास न करने वाले एवं संतों की विलक्षण कृपा, करुणा व सामाजिक उत्थान के उनके देवीय कार्यों को न समझकर समाज में अपने को मान की जगह पर प्रतिष्ठित करने की इच्छा वाले क्षुद्र लोग थे। वे संत की प्रसिद्धि और तेजस्विता नहीं सह सके। वे लोग विचित्र षड़यंत्र बनाने एवं येनकेन प्रकारेण लोगों की आस्था संत जी पर से हटे ऐसे नुस्खे आजमाकर सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज के ऊपर कीचड़ उछालने लगे। उनको सताने में उन दुष्ट हतभागी पामरों ने जरा भी कोरकसर न छोड़ी। उनके आश्रम के पास मरे हुए कुत्ते, बिल्ली और नगरपालिका की गन्दगी फैंकी जाती थी। संत श्री एवं उनके समर्पित व भाग्यवान शिष्य चुपचाप सहन करते और अन्धकार में टकराते हुए मनुष्यों को प्रकाश देने की आत्मप्रवृत्ति उन्होंने न छोड़ी, कहते हैं।

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज न केवल मानव मात्र को स्नेह देते थे, किन्तु पशुपक्षियों को भी अपना प्यार देते थे। स्वामी जी जहाँ भी सत्संग करते थे वहाँ मांस भक्षण का परित्याग करने के लिए प्रेरित करते थे। वे अपने प्रवचन में कहते हैं कि पशु पक्षी ये ईश्वर की संतान है, इनको मारकाट कर खाना पाप है। वो कहते हैं–

मांस खान से मनुष्य की, होवे बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म धर्म हो खीन।।

एक बार स्वामी जी सूफियों की दरगाह झोक शरीफ के मेले में गये। वहाँ भी स्वामी जी ने मांस भक्षण के विरुद्ध भाषण किया। उनके प्रवचन के प्रभाव से उस वर्ष मेले में किसी ने भी मांस भक्षण नहीं किया। स्वामी जी के इस प्रचार के हेतु हजारों प्रेमियों ने मांसाहार का त्याग किया। संत श्री प्रतिदिन सत्संग के द्वारा गुरु महिमा भी बतलाते थे। कहते थे–

सद्गुरु बिन निज ज्ञान न होवे, कहे टेऊँ सत्नाम।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति होवे, कहते वेद पुरान।।

गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। सांसारिक ज्ञान हो या आध्यात्मिक ज्ञान हो, उसकी उपलब्धि के लिए गुरु आवश्यक है. संत हो या सूफी कवि सबने गुरु की महत्ता पर बल दिया है। स्वामी जी सत्संग में कहते हैं–

गुरुमूर्ति को हिए में ध्याना, धारे जो चाहे कलयाना।

स्वामी जी को तो सब वेदों का ज्ञान था पर पैगम्बरों के "हदीसें" की बात बताते हैं–

फ़ना फ़ीशेख फनासी रसूल, फन्ना फिला बका बिला।

अर्थात् शेख माने मुर्शिद या सद्गुरु। तालिब अर्थात् जिज्ञासु पहले सत्गुरु की मूर्ति में फना हो जाए। अपनी खुदी अथवा अहंभाव खोदे गुरु महाराज तो ब्रह्मनेष्ठी ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मविचारी थे उन्होंने जन्म क्यों लिया कहते हैं ना।

जब-जब होए धर्म की हानि, आवहिं असुर अधम अविनाशी।
तब-तब धर प्रभु विविध शरीरा, हरिहिं कृपा निधि सजन पीड़ा।।

तो जब–जब धर्म की हानि होती है तब ही प्रभु नये नये शरीर धारण कर भक्तों को सही मार्ग दिखाते हैं। ऐसे ही हमारे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अवतार धर प्रेमियों को मुक्ति देने के लिये आये थे।

शंभू भोलाराम प्रेम प्रकाशी, प्रेम प्रकाश आश्रम, इन्दौर

प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा मर्यादा मूर्ति पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी का ७३ वाँ जन्मोत्सव कानपुर महानगर में ११ मई से १६ मई २००३ तक मनाया गया। प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान में यहाँ पर भी हमारे प्रतिमिधि श्री मनोज कुमार टेकचन्दानी जी को प्रेमियों का अनुकूल समर्थन प्राप्त हुआ। यहाँ पर भी पूज्य सन्त मण्डली द्वारा कानपुर के पूर्व के सदस्यों व १६ तारीख दोपहर तक बने नये सदस्यों में से दो सदस्यों को लक्की ड्रॉ द्वारा सोने के लॉकेट दिये जाने की घोषणा की गई। इस घोषणा को सुनते ही भक्त प्रेमी और अधिक उत्साहित होकर सदस्यता वृद्धि अभियान में सम्मिलित होने लगे। १६ मई को सायंकालीन समापन सत्संग सभा में सद्गुरु महाराज के जन्मोत्सव विशेष अवसर पर पूज्य स्वामी जी द्वारा लक्की ड्रॉ निकाल कर दो भाग्यशाली विजेताओं का चयन किया गया, जिन्हें पूज्य श्री के कर कमलों से सभा में ही आचार्य श्री के चित्र युक्त सोने के लॉकेट (प्रत्येक को एक) दिये गये।

भाग्यशाली सदस्य

१. UPH-1285-21677-12/03
पूजा गारमेन्ट्स
108/144, सीसामऊ बाजार, कानपुर

२. UPH-1421-22634-4/04
श्री अशोक कुमार टेकवानी
120/152, लाजपत नगर, कानपुर

सद्गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन

पावन सुस्मरण

मैं अपने इस जीवन में अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है एवं इस जीवन में आचार्य श्री सत्गुरु के रूप में मुझे प्राप्त हुए हैं।

सिंध में हम टण्डोआदम में रहते थे एवं बचपन से ही सद्गुरु महाराज के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उनके जीवन की मेरे आँखों देखी इतनी रोचक प्रेरणास्पद बातें हैं जिसमें से कुछ बातें मैं आपको बता रहा हूँ :–

एक दिन सद्गुरु महाराज ने मुझसे कहा कि– ठाकू आज भण्डारा हीरे भगत के घर है। तुम्हें भी चलना है।

उस समय मैं टण्डो आदम के एन.के. ऐकेडमी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता था। किताबें स्कूल में ही रखकर भण्डारे के टाईम पर अमरापुर दरबार पहुँच गया।

वहाँ से सद्गुरु महाराज एवं सभी संत एवं प्रेमी पैदल हीरे भगत के वहाँ चल दिये। सद्गुरु महाराज कभी भी कहीं जाते थे, पैदल ही जाते थे।

सो आगे–आगे सद्गुरु महाराज पीछे–पीछे हम चल दिए। मैने सद्गुरु महाराज जी की चिप्पी (पानी रखने का सन्तों का बरतन) हाथ में ली एवं चल दिए।

सद्गुरु महाराज इतना तेज चलते थे कि हमें दौड़–दौड़ कर उनके साथ चलना होता था। सभी हीरे भगत के वहाँ पहुँचे। वहाँ सद्गुरु महाराज विराजमान हुए।

सिंध में बारिश कम होती थी। आखाड़ का महीना था, गर्मी काफी ज्यादा हो रही थी। उस समय टैण्ट नहीं होते थे। चद्दर बांधते थे। काफी गर्मी लग रही थी।

तभी प्रेमी उठकर गुरु महाराज से प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभो इस साल बरसात नहीं हुई है गर्मी काफी है कृपया ऐसा सारंग सुनाईये कि वर्षा हो जाये।

तभी सद्गुरु महाराज ने मौज में आकर निम्न सारंग सुनाया :–

वस हर वेले, वस जैइं हर वेले। सावण वस मुंद बहार हर वेले।

सद्गुरु महाराज के सारंग गाते ही न जाने कहाँ से बदल आ गए एवं जोर की बरसात होने लगी।

सभी प्रेमी सद्गुरु महाराज की जय जय कार करने लगे। मैं टण्डे आदम अमरापुर दरबार में पानी एवं जूती की सेवा में रहता था। मैं सद्गुरु महाराज एवं दादा आसूराम जी (सद्गुरु महाराज जी के गुरु) की जुतीयाँ सत्संग हॉल में एक कौने में रखता था।

सत्संग समाप्त होते ही सद्गुरु महाराज जब बाहर निकलते थे, लाकर उनके सामने रख देता था।

एक दिन संयोग से सत्संग समाप्ती पर मैं थोड़ी देर के लिए किसी कारणवश कहीं चला गया। सद्गुरु महाराज एवं दादा आसूराम जी बाहर आये, एवं जूतियाँ नहीं देखकर दादा आसूराम जी ने सद्गुरु महाराज से कहाँ "टेऊँ किसी सेवाधारी से कहो जुती ले आये।"

तभी सद्गुरु महाराज दौड़कर अंदर गये (उनको पता था कि मैं जूती कहाँ रखता हूँ) दादा आसूराम जी की जूती लाकर उन्हें पहनाने लगे। तभी दादा आसूराम जी ने कहा "तुमने तकलीफ क्योंकी, मैंने तुम्हें सेवाधारी से कहने को कहा था" इस पर सद्गुरु महाराज ने अपने गुरुदेव से हाथ जोड़कर कहा कि मैं आपका सेवाधारी नहीं हूँ क्या ? ऐसी गुरु भक्ति हमारे सद्गुरु महाराज में थी।

सद्गुरु महाराज बीड़ी, हुक्का, कुछ नहीं लेते थे। मगर सद्गुरु महाराज अपने गुरु दादा आसूराम जी के लिए चिलम अपने हाथों से बनाते थे एवं उनके चरणों में बैठकर उनके सामने रखते थे।

अमरापुर दरबार टण्डो आदम में सभी संत जमीन पर सोते थे। स्वयं सद्गुरु महाराज भी जमीन पर ही विश्राम करते थे। दरबार में सिर्फ दो खाट थी। एक दादा आसूराम जी के लिए एवं दूसरी माता कृष्णा जी के लिए।

सद्गुरु महाराज जी कोई भी विचार विमर्श करते थे तो सभी सन्तों एवं प्रेमियों को एक साथ बैठाकर सबसे विचार विमर्श कर कोई निर्णय करते थे।

एक दिन सभी संत एवं प्रेमी आकर बैठे। तभी सद्गुरु महाराज ने कहाँ "शांतिप्रकाश नहीं आया है, उसे बुलाओ। तभी एक संत ने कहा स्वामीजी वह सूरदास आकर क्या करेगा।"

इस पर सद्गुरु महाराज ने कहा– "बाबा जो काम सूरदास कर दिखायेगा वो तुम आँखों वाले भी नहीं कर पाओगे।

उनके वचन देखिये सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी ने गुरु का ऐसा नाम बढ़ाया कि सद्गुरु महाराज के साथ वो भी अमर हो गये। सद्गुरु महाराज के आशीर्वाद वचन में कितनी ताकत थी।

सद्गुरु महाराज जी ने हैदराबाद में चोला छोड़ा। वहाँ से उन्हें आसन जमा कर मोटर कार में पीछे की सीट पर विराजमान कर टण्डो आदम लाया गया।

ईश्वर की लीला टण्डो आदम से दो मील दूर मोटर कार खराब हो गयी। टण्डो आदम में हमें सूचना मिली। हम सभी प्रेमी टण्डो आदम से पैदल डोली लेकर वहाँ गए एवं सद्गुरु महाराज को डोली पर लेकर पैदल ही टण्डो आदम दरबार पर आये।

सद्गुरु महाराज को अमरापुर दरबार में उनकी गादी पर विराजमान कर दिया गया एवं सारी रात भजन चलते रहे। मैं सद्गुरु महाराज के समीप बैठा था। उनके दोनों हाथों की अंगुली एवं अंगूठा मिले हुए थे। (जैसे नाम जपने के समय रहती है) मैं उनकी अंगुलियाँ सीधी कर हाथों पर मालिश कर रहा था।

मैं हाथ सीधे कर देता, मगर सद्गुरु महाराज की करामात वो अंगुली एवं अंगूठा फिर आपस में मिल जाते।

यह क्रम रात भर चलता रहा। ऐसा लगा मानों सद्गुरु महाराज समाधि में बैठे हुए हैं!

संतों का विचार हुआ कि सद्गुरु महाराज को समाधि दी जाये। मगर कवि पहलाज जो कि सद्गुरु महाराज के शिष्य थे उन्होंने कहा "पाकिस्तान बनने की बातें चल रही है, अगर पाकिस्तान बन गया तो समाधि में से कैसे निकालकर हिन्दुस्तान चलेंगे। उन्होंने सलाह दी कि स्वामी जी के शरीर का अग्नि संस्कार किया जाए एवं फूल रखकर समाधि बनायी जाये। जब भी चलना हुआ तो फूल का कलश ले जा सकेंगे।

कवि पहलाज के इन वचनों के आधार पर सभी संत सहमत हुए एवं सद्गुरु महाराज के शरीर का अग्नि संस्कार करने का निर्णय हुआ।

सुबह सद्गुरु महाराज को डोली में बिठाकर पूरे टण्डो आदम की यात्रा करवायी गयी। उसके पश्चात् अमरापुर दरबार में आकर उनके शरीर को पंच तत्वों में लीन कर दिया गया।

सद्गुरु महाराज के एक फूलों का कलश समाधि में रखा गया एवं एक कलश हरिद्वार में गंगाजी में प्रवाह हेतु ले जाया गया।

हरिद्वार गंगाजी फूलों का कलश लेकर संत उधवदास जी, संत सलामतराय जी (स्वामी सत्यप्रकाश जी) माता रेवे माँ, माता रुकी हैदराबाद वाली एवं दास (मैं) साथ गये।

सद्गुरु महाराज का हरिद्वार में इतना नाम था कि स्टेशन पर काफी संख्या में प्रेमी आए एवं जुलूस के रूप में उनके फूलों के कलश को लेकर हम हरिद्वार में चेतनदेव कुटिया पर रहे। वहाँ सद्गुरु महाराज की याद में दो–तीन आश्रमों में भण्डारा करवाकर हम वापस टण्डो आदम आये। सद्गुरु महाराज के साथ बिताये गये वो जिन्दगी के दिन ऐसे लगते हैं मानो कल की बात होवे।

मैंने अपनी तेरह साल की उम्र से ही इनका दरवाजा पकड़ा है। जैसे कुत्ता एक दरवाजा पकड़ता है तो मालिक उसका ध्यान रखता रहता है। पूज्य सद्गुरु महाराज जी भी मेरा एवं मेरे परिवार का मालिक की तरह पल–पल सम्हाल कर रहे हैं।

ठाकुरदास केशवदासजी आसवानी, मंदसौर (म.प्र.)

●

माया को पहचान लेना - एक दिन स्वामी जी एकान्त स्थल पर रहकर योग साधना कर रहे थे। एक दिन प्रातः काल ४ बजे जगकर शौच आदि से निवृत्त होकर पद्मासन लगाकर अपनी वृत्ति को सूक्ष्म करके समाधि लगाने लगे तो इस बीच गहनों की मधुर ध्वनि सुनाई दी। मन में विचार करने लगे कि इस समय इस घोर जंगल में गहनों की मधुर ध्वनि कैसे सुनाई दे रही है। समाधि खोलकर आँखें खोली और शब्द की ओर दृष्टि दौड़ाई तो देखा कि एक महासुन्दरी आ रही है। इसकी सुन्दरता से सारा जंगल ऐसे प्रकाशित हो रहा है। जैसे – पूर्णमासी के दिन आकाश में चन्द्रमा उदय होता है। यह विचित्र दृश्य देखकर स्वामी जी विचारने लगे कि इस घोर जंगल में इस समय यह महासुन्दरी

कौन है? कहाँ से आयी है और क्यों आई है ? इसी विचार में ही थे कि वह महासुन्दरी भी इतनी देर में धीरे-धीरे कुटिया के पास आ पहुँची। स्वामी जी की ओर देखकर मुस्कराने लगी।

स्वामी जी ने भी उसकी ओर देखकर सिर झुका लिया और अपने मन को समझाने लगे कि यह किसी देवता के द्वारा भेजी गई माया है और हमें भुलाने के लिये आई है। यह माया ही अनेक रूप धारण करके बड़े-बड़े ऋषियों, मुनियों को भुलाने आती है। हमारी समझ में तो यह माया ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय करके मस्तक ऊपर उठाया और उस महासुन्दरी की ओर देखकर मुस्कराने लगे। स्वामी जी को मुस्कराते देखकर माया पूछने लगी कि आप क्यों मुस्करा रहे हैं ? क्या आपने मुझे पहचान लिया?

इतना सुनकर स्वामी जी कहने लगे कि हम तुम्हें अच्छी तरह पहचानते हैं। तुम सबको मोहित करने वाली महामाया हो। अब आप सच-सच बताओ कि आप शुभकर्मी हो, या कुभकर्मी और यहाँ पर क्यों आई हो ? आप उपरोक्त बातें सच-सच बताओ नहीं तो हम तुम्हें श्राप दे देंगे।

माया घबराकर कांपती हुई बोली हे प्रभो ! मैं कुभकर्मी हूँ। मुझे देवराज इन्द्र ने आपकी परीक्षा के लिए भेजा है। आप इतनी घोर तपस्या किस लिए कर रहे हैं ? देवराज इन्द्र यह जानना चाहते हैं और जो कुछ प्रश्न पूछना है वह पूछ सकते हैं। मैं आपकी भक्ति, वैराग्य व तपस्या के आगे ठहर नहीं सकती। इस पर गुरु महाराज जी माया से पूछने लगे कि बता तुम्हें पापिन आदि नामों से क्यों पुकारते हैं। तुम कहाँ-कहाँ विचरती हो ? किस युग में जन्म हुआ है ? आपके रहने का घर कहाँ है ? आपका गुरु और पति कौन है ? आपको संतान कितनी है ? आपका जन्म किस युग में हुआ है ? इतना सुनकर माया ने जवाब दिया।

हे भगवन् ! आपने ऐसे प्रश्न पूछे हैं कि इसके पूर्व किसी ने भी नहीं पूछे हैं। मैं आपको वास्तविक स्थिति बता रही हूँ कि त्रेता युग में तीन गुणों से सत्व, रज, तम इनसे मैं और मेरी बहिन दोनों साथ-साथ पैदा हुई थीं। ईश्वर हमारा पिता है। महाशक्ति हमारी माता है। परब्रह्म परमात्मा हमारे दादाजी हैं। ब्रह्माजी हमारे ब्राह्मण हैं। उन्होंने ही मेरी बहिन का नाम शुभकर्मी व मेरा नाम कुभकर्मी रखा है। मैंने तीन लोकों अर्थात् देवलोक, मृत्युलोक व पाताल लोक को त्रसित कर रखा है। द्वापर में मैंने वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष व अहंकार की ध्वजा फहराकर महाभारत की महाभारी लड़ाई करवाई है। सात द्वीपों व नव खण्डों में मेरा निवास है अर्थात् मैं घूमती रहती हूँ।

अणखुट भण्डारा सांई टेऊँराम जी का :- एक दिन की बात है, संत बुद्धपुरी खण्डूनगर आए हुए थे। सत्संग के बाद सभा विसर्जन होने के पश्चात् स्वामी जी ने पास पड़ौस के आये हुए जिज्ञासु व मेहमानों को भोजन करने के लिये पंगत में बैठने को कहा। यह देखकर माता कृष्णा देवी जी ने स्वामी टेऊँराम जी को अपने पास बुलाकर कहा कि अब्बा भोजन तो केवल चालीस-पचास लोगों के लिये ही है, परन्तु यहाँ तो दो-तीन सौ से भी अधिक लोग भोजन के लिये बैठे दिखाई दे रहे हैं। अब क्या किया जाय ? घर में तो अनाज का एक भी दाना नहीं है, तो फिर पीसने पकाने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। अब जैसे कहें वैसा किया जाय।

विश्व-व्यापक, विश्वेश्वर, विश्वम्भर, वरदायक करूणावरूणालय प्रभु परमात्मा के अस्तित्व को संकेत मात्र से परिचय देते हुए व माता जी को सांत्वना देते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि माताजी ! विश्व का भरण-पोषण करने वाला जो प्रभु परमात्मा है वह अपने आप सबको भोजन खिलायेगा। इतना कहकर गुरु महाराज जी ने जल मात्र लेकर "सत्नाम साक्षी" का उच्चरण कर अजंलिभर जल का छींटा भण्डार पर छिड़क कर ऊपर सफेद चद्दर डालकर भक्त मंघनदास व सेवाधारियों को भोजन परोसने खिलाने की आज्ञा दी। जब संतों व मेहमानों के साथ पंगत ने भोजन कर लिया तब गुरु महाराज जी ने सेवाधारियों को कहा कि बाहर द्वार पर खड़े पन्द्रह बीस फकीरों को भी वहीं बिठाकर भरपेट भोजन खिला दो। सेवाधारियों ने आज्ञा का अनुसरण किया। तत्पश्चात् गुरु महाराज जी ने सेवाधारियों के साथ भोजन किया। बाद में जब प्रेमियों ने भोजन भण्डार से चद्दर उठाकर देखा तब भी पांच सात लोगों का भोजन बचा हुआ था। इस प्रकार गुरु का भण्डार अखुट होता है।

मेहमानों की स्वयं सेवा करना :- कोई भी मेहमान मुसाफिर आ जाता था तो सत्गुरु महाराज जी अपने ही हाथों से उसकी सेवा किया करते थे।

एक बार दिन को एक बजे कुछ बाहर के अतिथि

आए। सत्गुरु महाराज जी ने उन्हें प्रेम से अपने हाथों भोजन कराया। गर्मी का मौसम था, उन्हें आसन देने के बाद, पानी का मटका भी भरकर दिया। प्रेमियों ने उनसे पूछा, सत्गुरु महाराज जी अब कहाँ होंगे। सत्गुरु महाराज जी ने कहा, अभी सब लोग आराम कर रहे हैं। आप भी यहाँ आराम कीजिए, ऐसा कहकर सत्गुरु महाराज जी अपने आसन पर बैठे। तीन बजे उन अतिथियों ने साधुओं से सत्गुरु महाराज जी के बारे में पूछा। साधु उन्हें सत्गुरु महाराज जी के पास ले आए। प्रेमी सत्गुरु महाराज जी को देखकर विस्मित हो उनसे क्षमा मांगने लगे। सत्गुरु महाराज जी ने वात्सल्यपूर्वक कहा, बाबा ! हम भी सेवाधारी हैं।

अफीम जैसी बीमारी को जंगली पौधों के पत्तों से ठीक करना :- एक दिन उस जंगल का रखवाला **''सांई दिना''** प्रातःकाल को आया और सत्गुरु महाराज जी के चरण स्पर्श कर आंखों में आंसू भर कर कहने लगा–हे फकीर सांई ! सरकार जो वेतन मुझे देती है, उसका काफी पैसा अफीम खाने में खर्च हो जाता है, जिसकी वजह से घर का खर्च पूरा नहीं पड़ता, बच्चे नंगे–भूखे रह जाते हैं। मैंने दो–तीन बार अफ़ीम खाना छोड़ भी दिया। परन्तु उसे त्यागने से बीमार हो जाता हूँ। आप कृपा कर मुझे इस आफ़त से छुटकारा दिलवाइये। मैं बड़ा दुखी हूँ।

सत्गुरु महाराज जी ने खबड़ (एक प्रकार के जंगली पौधे) के पत्ते की मुट्ठी भर कर उसे देते हुए कहा जिस समय अफीम खाने का विचार आपके मन में आए, उस समय इन पत्तों में से दो–तीन पत्ते खा लेना। मालिक करेगा कि बीमार नहीं रहोगे। फिर हमारे यहाँ आते रहना। इतना सुनते ही वह सत्गुरु महाराज जी के चरण स्पर्श कर घर चला गया।

बांटकर खाना - वैकुण्ठ जाना :- अमरापुर स्थान पर कोई श्रद्धालु यदि कुछ प्रसाद लेकर आते और आकर गुरु महाराज के चरणों में रखते तो महाराज जी उसे वहीं पर खोलकर वहाँ उपस्थिति प्रेमियों में बांट देते थे। प्रेमी कहते महाराज जी यह आपके लिये लाये हैं। यह आप ही खायें, प्रेमियों के लिये और बहुत है। तब हमारे सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज क्या कहते हैं। भाई–

छुप के खाना : छाई (मिट्टी) पाना।
दिखा के खाना : धूड़ पाना।
बांट के खाना : सुखपाना या वैकुण्ठ जाना।

यह तीनों बातें गुरु महाराज जी में मौजूद थी। महाराज जी ने कभी भी अपने जीवन में छुप करके नही खाया। वरन् सभी को बांट करके खाया।

हम भी ऐसे संतों के जीवन से प्रेम की शिक्षा एक दूसरे से मेल–मिलाप की शिक्षा ग्रहण कर, अपना कल्याण कर सकते हैं।

खीयाराम भगत को चोरी की आदत समाप्त करना :- वैसे सिंध में संत तो बहुत हुये हैं, परन्तु सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज जैसा, कोई विरला होगा। गुरु महाराज परम करणा की मूर्ति थे।

खण्डू में सत्गुरु महाराज जी की सेवा में हंसराज व खिया भगत सदैव हाजिर रहते थे। ये दोनों जीवन पर्यन्त महाराज जी की सेवा में रहे। खण्डू के बाद जब महाराज जी टण्डे आदम आये तब भी यह दोनों सेवा में थे।

टण्डे आदम में भगत खिये को चोरी करने की आदत पड़ गई, अब चुराता क्या था, वहाँ जो स्थान पर संत महात्मा रहते थे, उनकी धोतियाँ व तोलिये चुराकर फिर ''हालन'' जाकर अपनी लड़की को देकर आता। लड़की उसे बहुत समझाती– बाबा ये आप करते हो, मुझे तो भगवान ने बहुत कुछ दिया है परन्तु ये खिया भगत माने ही नहीं। आखिर उसकी लड़की वो सारी धोतियाँ व तोलिये की गठरी बाँधकर गुरु महाराज जी को अमरापुर स्थान पर जाकर वापस कर गई।

उधर संतों की रोज–रोज चोरी से, संत नाराज होकर महाराज जी के पास शिकायत लेकर आये कि खिया भगत रोज हमारी चोरी कर रहा है, अतः आप इसे यहाँ से निकाल दें। तब महाराज जी संतों को शांत करते हुए बोले – अरे भाई यहाँ से मत निकालो यह जैसा भी है, हमारा है।

डॉक्टर के पास जब मरीज जाता है तो बीमारी से छूटने के लिए जाता है। यदि डॉक्टर उस मरीज को अच्छा नहीं कर पाता तो उसमें डॉक्टर की कमजोरी कही जाती है। अरे यह हमारे पास इतने समय से रह रहा है लेकिन हम इसे सुधार नहीं पाये, अतः यह हमारी कमजोरी है। जिस समय इसने सेवा करके हमें खुश रखा तब यह हमारा था, लेकिन अब इसे थोड़ा विकार ने घेरा है क्या अब इसे यहाँ से निकाल दें ? भाई यह तो हमसे नहीं हो पायेगा। इसकी अच्छाई का फल भी हमने खाया है, अब बुराई का फल भी

हम ही को देखना है।

गुरु महाराज जी की ऐसी प्रभावशाली व यथार्थ वाणी को सुनकर भगत खिया अत्यन्त लज्जित हुआ और गुरु महाराज के चरणों में गिर गया। गुरु महाराज जी ने अपनी करुणा व कृपा से उसका हृदय परिवर्तित कर दिया, वह पुनः संतों की भावपूर्वक सेवा करने लगा। तभी से वो संतों में भगत खियाराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यही है सत्‌गुरु महाराज की करुणा व कृपा।

भगत कंवरराम व सांई टेऊँराम की उदारता :- भाई कंवरराम की एक बड़ी खासियत यह थी, कि जो भी उनके कीर्तन में गरीब, सूरदास, अपाहिज इत्यादि आते थे, तो उन्हें उस कीर्तन में से झोली करके पैसे, कपड़े आदि की सेवा सहायता किया करते थे। अब लीला क्या हुई कि उस दिन कीर्तन में एक बूढ़ा भी आया था। उस बूढ़े के शरीर पर कपड़े पुराने व फटे थे। शरीर भी ठीक नहीं था, मुँह से लार भी बह रही थी, सिर व पैरों से भी नग्न था, वो बूढ़ा आदमी भाई कंवरराम से आकर कहता है ओ भाई कंवरदास मैं एकदम गरीब हूँ। पहिनने के लिए कपड़े तक नहीं है। इसलिए मुझे सर्दी भी खूब लग रही है, अतः मुझे तुम अपना ये जामा दे दो जिसे मैं पहनूँ।

उस समय भाई कंवरराम भी इधर-उधर संगत की ओर देखने लगे, कि कोई न कोई दे तो मैं इसे दे दूँ।

अब भगवत लीला ऐसी हुई कि किसी ने भी कुछ नहीं दिया। वैसे भाई कंवरराम के हजारों ऐसे मिलते थे, परन्तु उस दिन किसी ने भी नहीं दिया। इतने में सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज खड़े हुए और अपने शरीर से घघा उतार कर लंगोट में ही उस भरी सभा में खड़े हो गए। हजारों आदमी बैठे हुए हैं, सभी ने जब ये दृश्य देखा तो एकदम चारों तरफ शांति हो गई।

अब महाराज जी ने वो घघा उतार कर भाई कंवरराम को आंकर हाथ में दिया। और क्या कहा- भाई साहब ये इस बूढ़े को दे दें, खुद न देकर यह बड़ाई भी भाई कंवरराम को दे दी। भाई कंवरराम जी ने सत्‌गुरु महाराज जी से वो घघा लेकर उस बूढ़े को तो दे दिया अब भाई कंवरराम क्या कहते है-

स्वामी टेऊँराम आज तुम जीते और मैं हार गया। महाराज जी कहते हैं - सांई ऐसा कैसे ? तभी सांई कंवरराम जी कहते हैं- स्वामी जी कपड़े तो मेरे भी शरीर पर थे, परन्तु मैंने दूसरों की तरफ देखा कि कोई मुझे दे. तो मैं इसे दूं। मैं अपने शरीर का कपड़ा देने के लिए तैयार नहीं था। उस वक्त मुझे यह विवेक नहीं आ पाया। आपको परमात्मा ने ऐसा विवेक दिया जो अपने को नंगा रखकर भी, आपने दूसरों को ढका है। इसलिये आप जीते मैं हारा।

भाई है वक्त का दान, समय के दान का मूल्य होता है। ऐसे आप लाखों रुपये लुटाओ, आपको कोई कुछ नही कहेगा। परन्तु जो समय पर दान दिया जाता है, समय पर सेवा की जाती है उसकी जय-जयकार होती है।

आवतराय को मिला नया जीवन दान :- सिंध की बात है वहाँ आवतराय गुरु महाराज जी का जिज्ञासु रहता था। उन्हें संतान नहीं होती थी। उनके पिता उसी जमाने में एक बड़े जमीदार आदमी थे। असल में यह **"रूस्तम"** के रहने वाले थे। अब बात कौन सी।

उस आवतराय को कोई संतान नहीं थी। संतान प्राप्ति के उद्देश्य से उसने बहुत से उपाय खोजे अपनी तरफ से लेकिन सभी उपाय असफल गए। उस आवतराय की धर्मपत्नि का नाम पार्वती था।

एक दिन आवतराय अपनी धर्मपत्नी पार्वती से कहता है- पार्वती मेरे को कोई संतान नहीं है, इसके लिए मैंने बहुत से प्रयत्न भी किए हैं, लेकिन सभी असफल गए, अरे मेरी इतनी सारी मिल्कियत दौलत है अब यह कहाँ जायेगी। अब तुम मेरी इस बात से सहमत हो जाओ कि मैं दूसरा विवाह करूँ। इसी बीच उसका ससुर भी उसे कहने लगा- पार्वती पुत्री तुम आवत को इसके लिए इजाजत दे दो, लेकिन पार्वती रोकर के कहने लगी अपने पति आवतराय, से कि मेरे होते दूसरी पत्नी घर में मत लाओ, यदि मुझे सुखी रखना चाहते हो, शांति से जीना चाहते तो दूसरी औरत घर में मत लाओ। परन्तु आवतराय अपनी बात पर अड़ा रहा। आखिर एक फैसला हुआ कौन-सा ! पार्वती ने कहा- अच्छा, भला आप यदि ऐसा करना चाहते तो, मुझे कृपा करके एक बार स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास ले चलो। उस समय गुरु महाराज जी मण्डली सहित सक्खर में विराजमान थे। महाराज जी के साथ और भी संत थे। जैसे संत आलूराम जी बैरागी वाले, संत कृपालदास जी कण्डियारे वाले आदि और भी कई संत साथ में थे। अच्छा अब आवतराय एवं पार्वती प्रातः चार बजे वहाँ गुरु महाराज जी के पास पहुँचे। आते ही सीधे

महाराज जी की कुटिया में चले गए। वहाँ पार्वती गुरु महाराज जी के चरणों में बैठकर जोर–जोर से रोने लगी। तभी महाराज जी यकायक उठ बैठे और पूछते हैं भाई कौन हो ? तो पार्वती जवाब देती है– हे प्रभु। ये निभागी आपकी दासी पारी है।

जब पार्वती ने यह कहा, तब महाराज थोड़ा गम्भीर हो गए। कहने लगे–पुत्री ऐसे क्यों कहती हो? तब पार्वती ने कहा–सांई आपका पुत्र आवतराय दूसरी पत्नी घर में ला रहा है। मेरी आप से विनती है कि या तो मुझे पुत्र दो, यदि पुत्र नहीं देते हो तो मैं यह छुरा लेकर आई हूँ, फिर गला काट मुझे मार दो। जिससे मेरे मरने के बाद ही वो दूसरी पत्नी घर में लाये। अब आप दोनों में से एक काम करो, आप मालिक हैं। आप से मेरी यह प्रार्थना है अब आगे आपकी प्रसन्नता। इतना कहकर वो बस, महाराज जी के आगे रोती रही।

उस समय महाराज जी के साथ अन्दर स्वामी ग्वाललाल थे और कोई भी नहीं था। महाराज जी इतना सुनकर कुछ क्षण के लिए मौन हो गये। फिर एकदम आसन से उठकर कुटिया से बाहर आ गए। जैस बाहर आये सभी संत महाराज जी की ओर देखकर कहने लगे, क्यों भला आज महाराज जी कुछ गम्भीर मुद्रा में हैं। भाई कृपालदास भाई घन्डूराम, आलूराम और भी वहाँ संत थे। यह भी बड़े संत थे। इसलिए महाराज जी इनका बड़ा मान रखते थे। अब महाराज जी इन सन्तों के पास गये और कहा, भाई यह माता आई हैं संतान प्राप्ति के लिये आप संत प्रार्थना करो जैसे इस माता को पुत्र की प्राप्ति हो।

तो भाई कृपालदास व्यवहार में होशियार था। वो समझ गये कि कोई न कोई मामला जरूर है। विचार करने लगा कि स्वयं स्वामी जी अन्दर से उठकर आये, और हमें कह रहे हैं पल्लव डालने के लिये परन्तु स्वयं नहीं डाल रहे हैं। वहीं पर खड़े हुए भाई आलू को जब इस बात से अवगत कराया, तो वो कहने लगा कि भाई तुम समझो इस बात को घन्डूराम कहने लगा कि भाई तुम समझो फिर सभी कहने लगे भाई कुछ न कुछ हिसाब है।

अब संत कृपालदास कहते हैं गुरु महाराज स्वामी टेऊँराम जी महाराज से कि स्वामी जी आपकी आज्ञानुसार हम प्रार्थना तो करेंगे, परन्तु शर्त यह है कि पुत्र आप को देना पड़ेगा। यदि आप कहेंगे तो ही पुत्र होगा, बाकी हमारी प्रार्थना जिम्मेवार नहीं है। यदि यह शर्त आपको मंजूर हो तो ही हम पल्लव डालेंगे। परन्तु पुत्र आपको ही देना है।

जब संत कृपालदास ने ऐसे कहा तो महाराज जी मंद–मंद मुस्करा दिये। तब संतों ने भी प्रार्थना की उस माता पार्वती को भी संतों और गुरु महाराज जी की कृपा से संतान की प्राप्ति हुई। आज उन्हें दो पुत्र हैं एक कन्हैया, दूसरा जयदेव। तो भाई ऐसे हमारे सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज दयालु थे।

संकलन–**ज्योति खत्री** मालवीय नगर, जयुपर

पूरन सत्गुरू देव से, पूरन ले उपदेश।
कहे टेऊँ तिहं सुमरके पाओ देश।।

आचार्य सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जन्मोत्सव अवसर पर सदगुरू महाराज से सम्बधित संस्मरण अंक प्रकाशन को सुनकर अपने बुजुर्गों से सुने वृतान्त की यादें ताजा हो गयी। सदगुरू महाराज की अदभुत लीलाओं से घटित अनेको प्रसंग है पर उनमें हमने जो सुनी और देखी वह आश्चर्य के समान है! सबसे पहले इस परिवार के भाग्यशाली होने का कारण बताता हूँ हमारे पूज्य नानाश्री वीरूमल जी (अशोक बजाज पूना) के पिता जी सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गुरूदेव सदगुरू आसूराम जी महाराज के शिष्य थे, हमारे पूज्य पिता श्री वसणाराम तलरेजा जिन्हे गुरू महाराज के प्रेमीजन कोठार की सेवा से कोठारी वसणाराम जी के नाम से भी जानते हैं। वसणाराम उन भाग्यशाली लोगो में से थे जिन्होने सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज से नाम दान लिया, आज सारा कुटुम्ब प्रेम प्रकाशी है। वसणाराम सिन्ध देश के छोटे से गाँव बढाणी में साधारण परिवार से थे गुरूदेव के आशीर्वाद से कार्य ठीक चल रहा था अचानक कुछ समय से रोजगार में परेशानी होने लगी, व्यापार में नुक्सान हो रहा था। खेत में पक्की फसल में आग लग गयी, कुछ अनाज वर्षा के पानी से खराब हो गया, जहाँ वहाँ से नुकसान से परेशान होकर गुरूदेव को प्रार्थना पर प्रार्थना के पत्र लिखने लगे। दयावान गुरूदेव ने एक दिन पत्र में लिखा आज से तुम्हारे सारे काम ठीक हो जाऐंगे, उस दिन से वसणाराम साधारण परिवार से बहुत बड़ी जमीन के जमींदार हो गये। सदआचरण से एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गये। देश विभाजन से सिन्ध प्रदेश पाकिस्तान के

इस्से में आया वहाँ की सरकार संदेह के आधार पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों को झूठे आरोप लगाकर जेल में डाल रही थी। वसणाराम पर भी काली मिर्च की तस्करी का आरोप लगाकर जेल में बन्द करदिया गया। वसणाराम जेल में भी गुरूदेव की छोटी फोटो लेकर गये थे, जहाँ पर वह नित्य पूजा करते थे। कुछ मुसलमान ईर्ष्या से उन्हे ऐसा करने की मना करते थे। एक दिन जेलर ने आकर कहा मैंने तुम्हारी रिहाई का आवेदन बना दिया है। फिर जेलर ने कहा रात को सपने में एक फकीर पीर सांई यहाँ डंडा लेकर आये थे वह तालों को तोड़ रहे थे फिर उन्होने मुझ से कहा, कल इन्हे रिहाकर देना नहीं तो इसका परिणाम अच्छा न होगा, यह सब सुन कर सिपाहियों ने पिताजी से गुरूदेव की फोटो लेकर जेलर को दिखाई, जेलर ने पहचान कर कहा यही वह फकीर डंडे वाले सांई है जो रात में सपने मे आये थे। कुछ समय के बाद ढाणी गाँव में १२ डाकुओं ने डाका डालकर लुटपाट मारकाट में दो लोगो को मार दिया। वसणाराम ने डाकुओं से संघर्ष किया दो डाकू मार दिये, जब सारी घटना सदगुरू स्वामी सर्वानंद जी को मालूम पड़ी। वसणाराम को सिन्ध छोड़कर जाने को कहा फिर मध्यप्रदेश के छोटे से गाँव मुरैना में रहने की आज्ञा दी तब वह स्वयं भी मुरैना में संतो की मण्डली के साथ आते रहे। सभी संत महापुरूष श्री प्रेम प्रकाश आश्रम मुरैना के बनने से पहले वसणाराम के घर पर ही आते थे एक दिन 15-2-1998 को वसणाराम सोकर उठे अपनी धर्मपत्नि मीरा देवी से पूछने लगे आज अभी दो संत आये थे वह कहाँ पर है मीरा देवी ने कहा आज तो कोई संत नही आया, तब वह संतो को घर में इधर उधर देखने लगे, संतो को बाहर तक देखने भी गये। इसके बाद अचानक तबीयत खराब होने लगी जब डॉक्टर उन्हे देखने आये तब तक आसपास के पड़ौसी रिश्तेदार सभी घर में आ चुके थे। वसणाराम जी कहने लगे मुझे सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज दर्शन दे रहे हैं, अपनी पत्नी मीरादेवी को भजन सुनाने के लिये कहा एवं स्वयं भी धीरे-धीरे से साथ में गुरूदेव का भजन गाने लगे, भजन के बाद कहने लगे, सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज कह रहे हैं, सभी पूछने लगे क्या कह रहे है तब वह कहने लगे गुरूदेव साथ में चलने के लिये कह रहे हैं सभी कहने लगे!

जन्म जन्म पुनि जतन कराहीं।
अन्त राम कह आवत नाहीं।।

यहाँ तो स्वयं आचार्य सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपने गुरू भक्त शिष्य को राम से मिलाने के लिये भव सागर की पीड़ा को दूर करने के लिये साथ ले जाने आये हैं। यह जानकर सभी ने वसणाराम जी को कहा जो गुरूदेव आज्ञा कर रहे हैं आप भी वैसा ही करें, तब गुरूदेव उन्हे अपने अमरापुर लोक में ले गये। यह सब घटित घटना ने प्रत्यक्षदर्शियों को सदगुरू महाराज की असीम शक्ति दिखाई दी सिर्फ एक बड़ी भारी गलती हो गयी जो यह सब घटित घटना को हमेशा के लिये B.D.O. रिकार्डिंग न करा सके जो प्रत्येक प्रेमी के विश्वास को वट वृक्ष बनां देती।

प्रेषकः-सुरेश साँवल प्रेम प्रकाशी
प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना

सादगी

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समय कितनी सादगी भरा जीवन था एवं सभी संत किस तरह अनुशासन में रहते थे। यह हमें उनके जीवन-चरितामृत पढ़ने से ज्ञात होती है।

टण्डो आदम दरबार में सत्गुरु महाराज अपने हाथ में लाठी रखते थे और सभी सेवाधारियों के काम का निरीक्षण करते थे व स्वयं भी सेवा करते थे। सभी सेवादारी सत्गुरु महाराजजी के दर्शन कर, आनन्द से भरकर गाते रहते थे और कुछ उनका जय जयकार मनाते रहते थे, जिसकी बजह से उन्हें थकान का अनुभव नहीं होता था।

उस समय संत प्रेमानंद और संत संतदास भण्डारे का कार्य संचालित करते थे। बाजरे की रोटियाँ पकाई जाती थीं। स्वामी सर्वानन्द जी भी सब सेवाधारियों को काम बांट कर देते थे। वे स्वयं भी काम करते रहते थे। संत गुरुमुखदास, संत बसंतराम, संत मुरलीधर जी भोजन खिलाने की व्यवस्था करते थे।

रोटी बाजरे की हुआ करती थी और उसके साथ कभी दाल, कभी हरी सब्जी-पालक इत्यादि, कभी केर और कभी सीडरियों का साग बनाया जाता था।

जिस समय पंक्तिबद्ध बैठकर वे भोजन करते थे, उस समय कुछ प्रेमी सतगुरु महाराज जी से कहते थे- हे प्रभो ! रोटियों में बहुत अधिक बालू रेत है, जो कि मुँह में किट-किट

करती है क्योंकि भण्डारा कच्ची घास फूस का बना हुआ है जिसकी वजह से बालू रेत उड़कर आकर आटे और सब्जी में पड़ती है।

इस पर सत्गुरु महाराज जी उनसे कहते थे – आप किसी बात की चिन्ता मत करो और प्रेम पूर्वक भोजन करते रहो। यह बालू रेत जब आपके पेट में जायेगी तो पेट की जो भी बीमारी होगी, वह पूरी निकल जाएगी। जैसे बालू रेत बरतनों को साफ करती है, ठीक उसी प्रकार यह आपकी अन्तरात्मा को भी साफ कर देगी।

सत्गुरु महाराज जी के ऐसे वचन सुनकर सभी प्रेमी प्रेमपूर्वक भोजन किया करते थे। संत गुरुमुखदास जी सभी से कहते थे कि अगर बालू रेत मुँह में किट–किट करती है तो आप उस पर दांत मत गड़ाइये।

संत गुरुमुखदास जी के ये वचन सुनकर प्रेमी खूब हंसते थे और प्रसन्न होते थे। वे ऐसे मानकर चलते थे मानो वह सत्गुरु महाराज जी द्वारा प्रदत्त मिठाई हो।

सत्गुरु महाराज जी सभी संतों के साथ पंक्तिबद्ध बैठकर भोजन करते थे। यदि कोई प्रेमी मिठाई का पैकेट लाता था तो उसको सभी में बाँटकर खाया जाता था।

सत्गुरु महाराज कहते थे **"वंढके खाना वैकुण्ठ जाना, छिपकर खाना धूर पाना"।**

आशीष आसवानी, मंदसौर

नाम का महत्व

आज के युग में हम प्रेमी जब सद्‌गुरु के दर्शन को जाते हैं तो गुरु महाराज यदि किसी को अनदेखा कर देते हैं तो हमें ऐसा लगता है, जैसे उन्होंने हमें नहीं पहचाना, इस पर हमें कभी–कभी दुःख महसूस होता है।

मगर सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी के जीवन चरितामृत पढ़ने पर हमें ज्ञात होता है कि नाम का कितना महत्व होता है।

अमरापुर दरबार टण्डो आदम में सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज विराजमान थे, तभी एक प्रेमी प्रसाद लेकर, सद्‌गुरु महाराज के पास आया एवं सत्गुरु महाराज जी को दण्डवत् प्रणाम किया। सद्‌गुरु महाराज जी ने उन्हें टुकड़ा रोटी और चटनी (ढोढो चटनी) खिलायी और जल पिलाया और प्रेमी की ओर देखकर उन्होंने बड़े स्नेह पूर्वक उनसे पूछा, बाबा ! कैसे हो ? खुश प्रसन्न तो हो ना? बतलाईये तो कहाँ रहते हो ?

इतना पूछने पर उस प्रेमी की आँखों में जल भर आया और रोकर सत्गुरु महाराज जी से कहने लगा, हे भगवान् ! मैं आपके चरणों का दास हूँ। चैत्र मेले के अवसर पर आपसे "नाम" दान लिया था। अब मुझे एक शंका हो गयी है कि आप हमें यहाँ ही (इस संसार में) नहीं पहचानते तब परलोक में जब हमसे पूछताछ होगी, तब वहाँ आप हमें कैसे पहचान कर मदद करेंगे ?

इस पर सत्गुरु महाराज जी ने मुस्करा कर कहा, बाबा ! आप किसी प्रकार की चिंता न करें, जो गुरु मंत्र आपको मिला है, उसे ही पक्की तरह याद करो। शेष हमारे पहचानने की वहाँ जरूरत नहीं है। आप हमें अच्छी तरह पहचान लेना। जैसे कोई अमुक व्यक्ति यहाँ से पासपोर्ट निकलवा कर अमेरिका घूमने जाये, तब जहाँ भी उससे पूछताछ होगी, वहाँ पर वह पासपोर्ट और वीजा दिखाता जायेगा तो जाकर अमेरिका पहुँचेगा। अगर कोई व्यक्ति टिकिट लेकर गाड़ी में बैठेगा तो उस व्यक्ति (टी.टी.ई.) को केवल टिकिट ही दिखाना पड़ता है, वह टी.टी.ई. ऐसे नहीं पूछेगा कि आपका नाम क्या है ? किस जाति के हो? क्या काम करते हो ? उसे तो केवल टिकिट से काम है।

उसी प्रकार से जिन जिज्ञासुओं ने पूर्ण सत्गुरु से मंत्र रूपी पास या टिकिट लिया है वे बिना रूकावट के अमर लोक में जाकर पहुँचते हैं। उनके मार्ग में इंद्रलोक, सूर्यलोक, यमलोक आदि जहाँ–जहाँ भी उनसे पूछताछ होती है, वहाँ पर वे सत्गुरु के नाम का पास दिखाते हैं।"

हमने भी आपको "नाम" रूपी पास दे दी है। उसका पूर्ण अभ्यास कर पूर्ण पद को प्राप्त होइए। "सत्गुरु का दिया हुआ नाम ही सत्गुरु का रूप है"।

दोहा- ***शब्द गुरु का रूप है, गुरु शब्द के मांहिं।***
कहे टेऊँ यूँ जान के, निसदिन सुमरो तांहिं।।

तब वह प्रेमी सत्गुरु महाराजजी के यथार्थ बचन सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ एवं सत्गुरु महाराज के चरणों में झुक गया।

भगवानदास ठाकुरदास जी आसवानी, मंदसौर (म.प्र.)

जिन सेवीयाँ तिन पाईयाँ मान
धर्मादा होटल

आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अभी माता–पिता के घर में ही थे और अभी किशोर अवस्था ही

थी, खण्डू (सिंध) में पूर्वजों का मकान था, उस मकान के बाहर एक छप्परदार चबूतरा बना हुआ था उस चबूतरे में चार पाँच सादी चारपाईयाँ बिछी हुई रहती थी, सद्गुरू महाराज स्वयं उस चबूतरे पर ज्यादा समय बिताते थे ज्यादातर दोपहर के समय।

एक समय की बात है जब बहुत तेज गर्मी पड़ रही थी, दोपहर का समय था सदगुरू महाराज चबुतरे एक चारपाई पर लेटे हुए थे कि अचानक चार पाँच ऊँट वहाँ से गुजरे, उन्न ऊँटो पर एक बड़ा अंग्रेज अफसर (हैदराबाद सिंध के कलेक्टर) और दो तीन कर्मचारी भी थे, उन सबका शरीर और कपड़े पूरी तरह पसीने से भीगे हुए थे।

उनमें से एक सिंधी कर्मचारी ने आवाज देकर सद्गुरू महाराज जी से पूछा ! ऐ नवयुवक – यहाँ पर भोजन के लिए कोई होटल (ढाबा) है सद्गुरू महाराज जी ने उत्तर दिया हाँ श्रीमान् है फिर उस कर्मचारी ने पूछा वह होटल कहाँ है सद्गुरू महाराज ने अपने ही चबूतरे की तरफ इशारा करते हुए कहा श्रीमान् होटल यहीं है।

अंग्रेज कलेक्टर और कर्मचारी जो कि शिकार से आ रहे थे और बहुत थके हुए थे। और भूख प्यास से बहुत ही व्याकुल थे इसलिये अधिक विचार न करते हुए वे ऊँटों से उतर आये और आकर सद्गुरू महाराज जी के चबूतरे में चारपाईयों पर बैठ गए जैसे ही वे बैठे सद्गुरू महाराज जी ने अन्दर घर में जाकर पके हुए पापड़ और ठण्डे पानी के गिलास लाकर उनके आगे रख दिये भूख प्यास व्याकुल अंग्रेज अफसर और कर्मचारी पापड़ खाकर ठण्डा पानी पीकर शरीर में अंजीब सी ताजगी महासूस करने लगे। इतने में सदगुरू महाराज़ घर में से तकिये और गददे लेकर आये और बिछा दिये, कलेक्टर और कर्मचारी आराम के विचार से जैसे ही लेटे तो उनको नीद आ गयी।

इस बीच सद्गुरू महाराज जी ने घर में जाकर भोजन बनवाया भोजन में गेहूँ और ज्वार की रोटी हरा साग और भिण्डी की सब्जी।

तकरीबन एक घण्टे पश्चात जब सब लोग जागे तो सद्गुरू महाराज जी तमाम सादे बर्तनों में भोजन के साथ बडे गिलासो में लस्सी भी भरकर ले आये भोजन में इतना अजीब रस और स्वाद था कि वे लोग खाते जा रहे थे और सद्गुरू महाराज जी देते जा रहे थे।

अंग्रेज अफसर अंगुलियाँ चाटकर अपने कर्मचारीओं को कह रहे थे इस होटल की बहुत ही स्वादिष्ट रोटी है मैने विदेश या यहाँ हिन्दुस्तान में कही भी ऐसा स्वाद भरा भोजन नहीं खाया है। हर एक कर्मचारी ने भी अपनी भूख से ज्यादा रोटी खाई।

अंग्रेज ऑफिसर ने अपने कर्मचारियों को हुक्म दिया कि इस होटल वाले को पैसे, जितने ये माँगे उससे ज्यादा देना, "जब कर्मचारियों ने सदगुरू महाराज से भोजन और मेहनत के पैसे पूछे तो सदगुरू महाराज जी ने हाथ जोड़कर कहा ! हे प्रभू के प्यारे इस होटल पर खाना पैसों में नही बिकता इस रोटी की कीमत तो केवल प्रेम है आप मेरे इस चबूतरे में थोड़ी देर के लिए रुके हैं। और भोजन पाया है। इसलिए मैं आपका आभारी हूँ, और इस आभार के फलस्वरूप मुझको आपको कुछ देना चाहिए। और मैं केवल प्रेम ही देता हूँ। सद्गुरु महाराज जी के ये वचन सुनकर वे बहुत आश्चर्य चकित हो गये, और उसी क्षण समझ भी गये, वास्तव में ये कोई हौटल नहीं है, ये तो भगवान के भगत का घर है, और इसकी भक्ती में अद्भुत शक्ति समायी है। फिर उसने ये पूरी वार्तालाप अपने ऑफिसर को अंग्रेजी में सुनायी तो ऑफिसर के अन्दर में खुशी की लहर छा गयी और सद्गुरु महाराज के प्रेम में मस्त हो गया, उसके पश्चात् सभी ने सद्गुरु महाराज जी से गले मिलकर और हाथ जोड़कर विदाई ली, और ऊँटों पर चढ़कर हैदराबाद (सिंध) की ओर रवाना हो गये।

सद्गुरु महाराज जी अपने चबूतरे के बाहर बहुत देर तक खड़े रहे, और अंग्रेज अफ़सर पीछे मुड़कर उनकी ओर देखते रहे, जब तक कि नजर में आ रहे थे। जब तक नजर में आ रहा थां तब तक प्रेम भरी अंखियों से व्याकुल होकर देखते रहे।

सद्गुरु महाराज ने ये सेवा का कार्य इसलिए नहीं किया था कि वे अंग्रेज ऑफिसर और कर्मचारी थे उन्होंने तो अतिथि भगवान के रूप समझकर उनकी श्रद्धा और प्रेम से सेवा की।

नोट :– कहते हैं कि आगे चलकर जब सद्गुरु महाराज जी टण्डे आदम में आये तो वहाँ पर अमरापुर स्थान की जगह मिलने की कशमकश में इसी ऑफिसर के पास जो कि उस वक्त कराची डिजीजनल कमिश्नर बन गये थे। तो उनके

पास जैसे कागज पहुँचे तो उन्होंने एक दम से साईन कर दी उस ऑफिसर को ये नहीं पता था कि ये वो ही है जिन्होंने कुछ समय पहले उनको भोजन कराया था।

भेजने वाला टेऊँराम- लेने वाला टेऊँराम

टण्डे आदम अमरापुर दरबार प्रारम्भ के समय की बात है जब दरबार पर आधा मन भोजन की सामग्री लाई जाती थी। जिसमें से सुबह व शाम सन्तों के लिए भण्डारा बनाया जाता था। प्रतिदिन ११ बजे भण्डारे की घंटी बजती थी और घंटी बजते ही दरबार के सब सेवादारी, सन्त जो कहीं भी होते थे। भण्डारे में पहुँच जाते थे। एक दिन की बात है कि जब घंटी बजने में थोड़ी देर बाकी थी तो अकस्मात् फकीरों का एक बड़ा टोला दरबार में आ पहुँचा और आकर सभी फकीर रोटी माँगने लगे। सद्गुरु महाराज जी उस समय एकान्त स्थान (खबड़ के पेड़) में ध्यान मग्न थे। फकीरों की बात सुनकर हंसराज भण्डारी सद्गुरु महाराज जी के पास जाकर विनती करने लगे कि भगवन् ! फकीरों का एक टोला आया है और भोजन माँग रहे हैं। सद्गुरु महाराज जी ने पूछा कि क्या भोजन तैयार हैं ? हंसराज भण्डारी ने जबाब दिया – हाँ महाराज जी तैयार है। इस पर सद्गुरु महाराज जी बोले कि पुत्र फिर देर क्यों कर रहे हो जाकर उन्हें भोजन दे दो। ये सुनकर भण्डारी ने चुपचाप आकर फकीरों में भण्डारा चलाना शुरु कर दिया। अन्ततोगत्वा भोजन समाप्त हो गया। लेकिन फकीर कम नहीं हुए। दरबार के दो तीन सन्त जो भण्डारें के पास बैठे थे, यह सब देखकर भण्डारी से कहने लगे। क्या हमारे खाने के लिए थोड़ा भोजन बचा है या नहीं। भण्डारी ने उत्तर दिया सद्गुरु महाराज जी की आज्ञा है कि फकीरों में भोजन वितरण करो। ऐसा कहकर भण्डारी फिर सद्गुरु महाराज के पास दौडता हुआ गया और विनती कि महाराज भोजन समाप्त हो गया लेकिन फकीर लोग अभी भी खड़े हैं। सद्गुरु महाराज ने पूछा कि क्या कच्ची रसोई पड़ी है ? भण्डारी ने उत्तर दिया महाराज रात के भोजन के लिए कच्ची रसोई रखी है। इस पर स्वामी जी ने कहा रात की रात को देखेंगे अभी जाकर फकीरों को कहो कि पक्की रसोई तो पूरी हो गयी अब कच्ची रसोई ले जाओ और खुद पकाकर खाओ। हंसराज भण्डारी सद्गुरु महाराज जी की आज्ञा का पालन करते हुए कच्ची रसोई वितरण करने लगा। भण्डारे की घंटी समय पर न बजने के कारण कुछ साधु (सन्त) आकर भण्डारी से कहने लगे कि आज घंटी बजाना भूल गये हो क्या ? भण्डारी ने जवाब दिया कि आज सभी लोग उपवास रखो। सन्तों ने कहा कि वाह भाई आपका धर्म और आपकी सेवा। आ रही है हमारे ऊपर कुछ दया कि दिनका भोजन खत्म कर दिया और रात का भोजन लुटा रहे हो। विचार कर रहे हो कि रात को क्या खायेंगे। इस पर भण्डारी ने नम्रता से उत्तर दिया – मैं तो हुक्म का बंदा हूँ ये सब तो सद्गुरु महाराज जी की आज्ञा है ये रसोई तो क्या, अगर सद्गुरु महाराज जी आज्ञा करेंगे तो झोले, इकतारे, बाजे आदि भी दे दो तो वो भी दे दूँगा। ऐसे में कच्ची रसोई फकीरों में वितरण हो गयी।

भगवान की माया और हमारे सद्गुरु महाराज की लीला बहुत ही विचित्र है। वे अपने प्यारे भक्तों के दु:ख सहन नहीं कर सकते हैं।

शाम को लगभग ४ बजे १ बैलगाड़ी आयी जिसमें १ चावल की और २ आटे की बोरियाँ थी, ३५ फुट ऊँचे रेत के टीले (डिब) अमरापुर स्थान (दरबार) के नीचे सड़क पर खड़े हुए गाड़ी चालक ने ऊँचे स्वर में आवाज दे करके पूछा, कि टेऊँराम जी की डिब यें है, भण्डारी ने ये बात सुनकर उत्तर दिया– कि हाँ गाड़ी वाले ने कहा – कि ये सामान ले लो इस पर भण्डारी ने पूछा– किसने भेजा है ? उसने कहा– मेरे को तो नाम बताया ही नहीं, फिर भण्डारी ने कहा जब तक नाम नहीं बताओगे तब तक नहीं लेंगे। ये सुनकर बैलगाड़ी चलाने वाला बोरियाँ वहीं नीचे सड़क पर उतार कर चला गया, ये देखकर भण्डारी ने नीचे आकर बोरियों को देखा तो उन पर लिखा हुआ था कि भेजने वाले टेऊँराम और लेने वाले भी टेऊँराम।

शाम को ६ बजे जब सत्संग की घंटी बजी, तो सभी सन्त और सेवाधारी अपने अपने कुटियों और एकान्त स्थानों से बाहर आ गये।

सद्गुरु महाराज भी आकर विराजमान हुए। हंसराज भण्डारी ने गुरु महाराज जी के पास बैठकर बोरियों के आने का समाचार सुनाया। समाचार सुनकर करुणा निधान, हितकारी, परोपकारी, सद्गुरु महाराज जी ने ऊपर नजर उठाकर चारों तरफ देखा और फिर बोले कि बोरियाँ ले आकर रखो। परन्तु

दुःख केवल इस बात का है कि जब बाबा के नाम पर देना था तो रो रहे थे, और देखो ये दादा ने भेजा है।

जब साधु होके भी विश्वास और सहन शक्ति नहीं है तो फिर आगे ये क्या कल्याण करेंगे। केवल बेखी होकर आसन लगाकर अपना पेट पालेंगे। ये कहकर सद्गुरु महाराज जी ने एक श्लोक कहा ?

श्लोक :- जिनजी दया देयण ते, तिनजां भण्डारा
भरपूर धारे श्रद्धा विश्वास खे, मुंह न मूड़िन मूर।।
दुःख तिनिजां दूर, कष्ट थियन काफूर।
टेऊँ पहले पूर, पार लंघन से पतण।।

ये सुनकर जिस जिस ने भण्डारी से भोजन के विषय में कहा था उनकी गर्दन शर्म से झुक गई।

महेन्द्र प्रेम प्रकाशी, अमरापुर स्थान, जयपुर

प्रेम रूपी जेल में बन्द है सन्त महापुरुष

पुष्पों की सुगन्ध, फलों के स्वाद को कोई कम नहीं कर सकता है। इत्र की शीशी से सुगन्ध तो आयेगी। ऐसे ही महापुरुषों की भक्ति की सुगन्ध चहुँ ओर व्याप्त रहती है। चाहे उसे कितना ही ढकना चाहें पर वो तो सदैव कायम रहती है।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिन्ध प्रदेश में यत्र तब धर्म का प्रचार कर रहे थे। भूले-भटके जीवों को सत्मार्ग दिखलाकर परमात्मा के मार्ग पर लगा रहे थे। उनकी प्रभावमयी वाणी से लोगों को अपने स्वरूप का ज्ञान हुआ।

महाराज श्री की यश-कीर्ति से प्रतिद्विन्दी लोग ईर्ष्या कर्ने लगे। ईर्ष्यालुओं ने महाराज श्री व उन की मण्डली को नीचा दिखाने हेतु गलत प्रचार-प्रसार करने लगे। एक बार कुछ प्रेमियों ने आकर महाराज श्री से कहा ! प्रभु कल अखबार (समाचार पत्र) में मजहबियों ने लिखवाया है कि स्वामी टेऊँराम जी की मण्डली व सन्तों को जेल में बन्द कर दिया। ये आपके खिलाफ दुष्प्रचार कर झूठे लेख अखबारों में प्रकाशित करवा रहे हैं। भगवान आप आज्ञा दें तो हम उन्हें इसका जोरदार जबाब दें।

महाराज श्री मुस्कराकर कहने लगे। आप शान्ति बनाये रखें। उन लोगों ने ठीक ही छपवाया है। हकीकत में हम सभी भगवान के प्रेम रूपी जेल में बन्द हो गये हैं। हम सब को संसार का पता ही नहीं चलता है। एकान्त में बैठकर भजन कर रहे हैं।

प्रेम ने मुझको बाँध लिया है। **ब्रह्म के बन्द खाने-मद मैखाने।** हमें प्रेम के ब्रह्म रूपी बंदखाने (जेल) में बन्द कर दिया है। जिस प्रकार एक शराबी हर समय मैखाने में शराब पीकर मस्त रहता है। उसे फिर संसार की कुछ सुध-बुध नहीं रहती है।

इसी प्रकार संत महात्मा ईश्वर के भजन में मस्त रहे हैं। वे संसार को भूलकर सदैव परमात्मा चिन्तन में स्थित रहते हैं। निन्द्रा करने वालों के प्रति भी ऐसी कृपा दृष्टि करते हैं सन्त महापुरुष।

''गुरु कृपा'', श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का ११७ वाँ अवतरण दिवस ५ जुलाई २००३ शनिवार

अपने घर पर भी मनायें जन्मोत्सव

इस दिन सभी प्रेम प्रकाशी, श्रद्धालु प्रेम प्रकाशी आश्रमों के अतिरिक्त घर-घर में मनायें सद्गुरु महाराज जी का पावन जन्मदिवस इस प्रकार से-

१. इस दिन प्रत्येक प्रेम प्रकाशी कम से कम एक भूखे प्राणी को पेटभर कर भोजन करावे।

२. प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म से निवृत होकर स्नानादि पश्चात् स्वच्छ वस्त्र धारण कर दीपं जलाकर पूज्य आचार्य श्री जी की मूर्ति पर पूजा व फूल समर्पित कर **''स्वामी टेऊँराम चालीसा''** (जो इसी अंक में प्रकाशित है) का कम से कम ५ बार व अधिक से अधिक ११ बार पाठ कर सकें तो अच्छा होगा।

२. इस दिन हर प्रेम प्रकाशी को अपने घर में साफ सफाई करके सूर्यास्त के पश्चात् घर के द्वार पर कम से कम एक दीपक अधिक से अधिक अपनी श्रद्धानुसार दीप जलाना चाहिये।

३. सद्गुरु महाराज जी के अवतरण की खुशी में यदि इच्छा हो और कर सकें तो घर पर ही पूज्य आचार्य जी के अवतरण के पावन उत्सव पर १ जुलाई से ५ जुलाई तक नित्य प्रति सुबह व सायं कम से कम ''सत्नाम साक्षी'' मंत्र की ५ माला फेर सकते हैं।

प्रेम प्रकाश सन्देश परिवार

सद्गुरू टेऊँराम चालीसा

प्रथमे हरिहर ब्रह्म को, बार बार प्रणाम।
नर तन धर त्रिदेव जो, होया टेऊँराम।।
तप्त धरा मरूदेश में , मेध देत सन्देश।
त्यों जग के कल्याण हित, हरि धारे नर भेष।।

सिन्ध देश की महिमा भारी, बार बार ऋग्वेद उच्चारी
सिन्धु तीर पावन प्रसंगा, बहती जहां ज्ञान की गंगा
ऋषी मुनी अरू ज्ञानी ध्यानी, पढ़ते जहां ब्रह्म की बानी
धन्य सिन्ध की धरती सारी, धन्य सिन्ध के नर अरू नारी
समय बड़ा प्रबल प्रवीना, वेद पुराणनि वर्णन कीना
काल चक्र दुस्तर अति भारा, आ अधर्म ने पांव पंसारा
धर्म कर्म भूले नर नारी, पाप कर्म में वृत्ती धारी
गीता में श्री कृष्ण सुनाया, जब जब भार भूमि पर आया
तब तब ही अवतार धरूं मैं, सत्यधर्म की विजय करूं मैं
प्रण पालन हित ले अवतारा, आए खण्डू नगर मंझारा
चेलाराम के आंगन माहीं, खुशी भई सब के मन माहीं
कृष्णा मां को दरश दिखाया, चतुर्भुजी निज रूप पसाया
शुक्ला तिथि षष्ठम आसाढ़े, प्रकट भए सब काज संवारे
शनीवार का दिवस सुहाना, शशिसम चमकत रूप जहाना
लोली दे दे मात लुडावे, गद् गद् गीत कण्ठ से गावे
बालक वय से हरिगुन माहीं, प्रीत लगी प्रभु सुमरन माहीं
विद्या हेतु जब उन्हें पठाया, सत्गुरु आसूराम तहं पाया
गुरु बोले हो स्वयं सिद्ध तुम, परिपूर्ण हो ब्रह्म शुद्ध तुम
बैठ एकान्त में ध्यान लगाया, सहज समाधि के सुख को पाया
खान पान जग विषयों माहीं, रंचक मन कहं लागत नाहीं
लगन लगी गुरु शब्द मंझारी, टूटी मोह कोह की जारी
बालक गण को साथ बिठाये, राम नाम की धुनी लगाए
इक दिन सिन्धू नदी किनारे, बालक गए नहाने सारे
वस्त्र उतार तट पर रेख दीन्हें, टेऊँराम के सुपुर्द कीन्हें
बालक जल में खेलन लागे, खिल्लू था उन सब में आगे
खेलत खेलत खिल्लू डूबा, सबने देखा बड़ा अजूबा।।
वस्त्र सहित गुरु जल के माहीं, कूदे लुप्त भए फिर ताहीं
बालक भय से रोअन लागे, समाचार देवन कुछ भागे
शोकाकुल आये नर नारी, चमत्कार देखा इक भारी
खिल्लू अपनी गोद उठाये, सत्गुरु जी तब बाहर आये
अद्भुत ऐसा देख निजारा, विस्मित भया नगर तब सारा
खिल्लू कहा सुनो हे भाई, डूब गया जब मैं जल माहीं
सुन्दर देव वहाँ दो आए, पकड़ा मुझे, वरुण ढिग लाए
इतने में टेऊँराम पधारे, तांको देख प्रसन्न भए सारे
अभिवादन वरुण तब कीन्हा, निज सम्मुख ही आसन दीन्हा
कहन लगे कुछ सेवा बताएं, बोले खिल्लू लेन हम आए
प्रसन्न हो तब दीन्ह विदाई, सद्गुरु ने मम जान बचाई
धन्य धन्य गुरु टेऊँरामा, परम पवित्र तुम्हारा नामा
जब हो हे गुरुदेव तुम्हारी, सुख सागर तुम अति हितकारी
स्वर्ण आग संग मल ज्यों त्यागहिं, लेवत नाम पाप त्यों भागहिं
तप्त बुझावत हैं चन्द ज्यों, शीत हृदय करत नाम त्यों
इच्छित वस्तु कल्पतरु देवे, नाम मरते सब फल सेवे
अब तो सत्संग की धुनि लागी, मन की माया ममता त्यागी
डंडा झांझ लिया यकतारा, बाजा तबला साज प्यारा
गली गली में धूम मचाई, कृष्ण जैसे रास रचाई
प्रेम बढ़ा जब खण्डू माहीं, गुरु सोचा यहं रहना नाहीं
नाम कीर्ती जय जयकारा, इन बातों से सन्त न्यारा
यह विचार कर बिना बताए, जंगल में कुछ दिवस बिताए
आसन वहां जमाया स्थिर, हिंसक जन्तू का था ना डर
खोज खोज प्रेमी वहं आए, लौट चलें सबने समझाए
थिर आसन निश्चल मन ठाना, कहा अभी फिर लौट न जाना
घास फूस तृण कुटी बनाई, कन्द मूल खा जान सुखाई
गुरुमन्त्र का कर अभ्यासा, मेट दई जम की सब त्रासा
आतम अन्तर वृती लागी, जगत वासना सकली भागी
पावन भूमी वह जग माहीं, हरिजन करत तपस्या जाहीं
तिस भूमी की रज सिर लावत, गिरिजा को कह शंभु सुनावत
तीर्थ सम वह पूजन जोगी, जहं जहं नाम जपत है योगी
धन्य धन्य है सो अस्थाना, अमरापुर है उसका नामा
अमरापुर स्थान अमर है, दर्श करे सो फेर न मर हैं
चार धाम सम पवित्र धामा, अमरापुर है उसका नामा
तांकी महिमा कहीं न जाई, शेष शारदा पार न पाई
बैठ जहाँ गुरु ज्ञान सुनाया, सत्नाम साक्षी मंत्र जपाया
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाया, सोए जीवों को था जगाया
जब तक गंग यमुन का पानी, तब तक अमर रहेगी कहानी
सूर्य चन्द्र प्रकाश हैं जौं लौं, नाम प्रकट जग में तव तौं लौं

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान।
अमरापुर वाणी अमर अमरापुर स्थान।।
आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम।
तव शरनागत भी अमर धन गुरु टेऊँराम।।
साधु सन्त सब पूज्य हैं, सबको हैं प्रणाम।
स्वासों में पर रम रहे, सत्गुरु टेऊँराम।।
चालीसा गुरुदेव की, पढ़े सुने जन जोय।
श्रद्धा मन में जो धरे, मुक्ती पावे सोय।।

सत्संग-यात्रा विवरण

पूज्यपाद सदगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का देशाटन

कानपुर में सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 73वां जन्मोत्सव, से कानपुर में आनन्द ही आनन्द

इलाहाबाद, वाराणसी में त्रिवेणी गंगा स्नान के साथ काशी विश्वनाथ के दर्शन

गोरखपुर में गीताप्रेस के दर्शन, पूर्व सांसद महन्त अवैद्यनाथ जी से भी ज्ञान चर्चा

११ मई से १६ मई २००३ तक सम्पन्न जन्मोत्सव के आज प्रथम दिवस पर जो शोभा यात्रा शाम को ५ बजे आश्रम से निकाली गयी। जिसमें भगवान राधा–कृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जी के साथ लक्ष्मण जी श्री जनक नन्दिनी माँ सीता जी व राम भक्त श्री हनुमान के अनुपम स्वरूप भक्त कंवरराम इस शोभा यात्रा की अद्‌भुत झांकियाँ थीं। साथ में श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व आचार्य जी के साथ सद्‌गुरुदेव के स्वरूप भी शामिल थे, बैण्ड-बाजों के साथ शहनाई वालों ने भी बड़ी धूम मचाई। अपार जन समूह के साथ पूज्य गुरुवर जब पैदल यात्रा करते हुए चल रहे थे तो मानों प्रेमियों के हृदय खुशी से समाए न जा रहे थे। गत ५० वर्षों के इतिहास में कानपुर में ऐसी भव्य शोभा यात्रा आनन्द दायक नहीं निकाली गयी है। यह आचार्य गुरुदेव जी सत्‌गुरु महाराज की कृपा का ही बेहद श्रेष्ठ अवसर मिला है। यह जन्मोत्सव सिन्धी कॉलोनी स्थित सन्त कंवरराम धर्मशाला में विशाल भव्यतम आयोजन के साथ हजारों प्रेमियों की उपस्थिति में मनाया गया है। इस महोत्सव में सारे भारत के सन्त महापुरुष इस ज्ञान यज्ञ में सम्मिलित हुए।

दिनांक १२ मई २००३ प्रातःकाल ६ बजे से ११ बजे तक सत्संग सभा प्रार्थना के साथ आरम्भ हुई। संत हरीशकुमार, संत परसराम के साथ सन्त श्री मुक्त, भक्त मूलचंद, ने **सत्‌गुरु हरिदासराम, स्वामी ब्रह्मज्ञानी, आया ओ आया, गुरु थव घर में प्यारा** भजन के साथ मनुष्य जीवन का महत्व बताते हुए कहा **आवेगा मर जावेगा, भजन बिना पछतावेगा।** सन्त स्वामी जयदेव जी महाराज ने भी अमरापुर वाणी का भजन गाते हुए बताया :–

करले करले हरी भजन सुखदायी
हरि भजन उर आनन्द भरता
मन की ममता चिंता हरता
जो जन हरि का स्मरण करता
सो जन भवसागर से तरता

सन्तों ने महिमा गाई, भजन के अर्थ कई होते है भूखे को भोजन प्यासे को पानी किसी के दिल को दुखाना नहीं। सर्व का भला करना भजन है। जो बुरा करे उसका भला करना उत्तम मनुष्य का लक्षण है।

आये हर्ष न ऊपजे जाये शोक न होय।
ऐसी रहणी जो हरिग्रह धन जोगी सोय।।

आरती व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ सन्त नरेशलाल व श्री मद्‌भगवत् गीता का पाठ संत हरीओम लाल द्वारा रखा गया।

जन्म–महोत्सव के दूसरे दिन सत्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने भगवद् प्रेमियों को अमृत पिलाते हुए कहा–

पूर्व पुण्य .ते पाइया मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिंह सफल कर सुमरे सृजणहार।
हिन देहीअ खे जीव चराचर चित सां सभई चाहिनि था।
देवी देवता किन्नर गंधर्व भाग वदे सां पाइनि था
अहिड़ी दुर्लभ देहीअ खे छदि गफलत मे न गंवाए रे
मिल्यो मनुष्य जनम तोखे आहे सो व्यर्थ छदि न विञाए
हर हर अहिड़ो मिले न चोलो वठु तू सफल बणाए।
माला तो कर में फिरे जीभ फिरे मुख मांहि
मनुवा तो दह दिस फिरे यह तो स्मरण नाहिं।

नाम के साथ मन की वृति को जोड़कर शांति को प्राप्त किया है। महापुरुषों ने बतलाया है चार दिवस की जिन्दगी में उसमें भी दुख सुख चिंताए मन को विचलित कर देती है।

तेरे मन कुछ और है हरि के मन कुछ और।
हरि के मन की होन दे मती मचावे शोर।

अजब आ राम जी लीला छा मां छा बणाए थो।
बंदे जे मन में हिकड़ी प्रभु वरी बी बणाये थो।

यह जीव संसार में अकेला आया है अकेला जायेगा इस जीवन यात्रा से आगे और यात्रा करनी है।

अगियां जम जी वाट अणाई रामु नामु उति थिए सहाई
ध्यानु तहींजो मन धारि तूं प्रेमी प्यारा रामु नामु न विसरि तू
हीरो ही जनमु न हारि तूं।

तन के दुख बीमारी के दुख चिन्ता, उपाधि शरीर को आप समझाना, विषय विकारों में मन को हटाना गुरु के उपदेश शिक्षा को समझना।

मन को स्थिर करना बड़ा दुष्कर कार्य है भगवान श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को बतलाया वायु से भी तेज गति है मन, की जिसको गुरु के नाम अभ्यास व वैराग्य के द्वारा वस में करने की युक्ति बतलाई गयी है।

गुरु बिन होय कि ज्ञान, ज्ञान कि होय वैराग्य बिन
बाखहि वेद पुरान सुधि न, लहहिं हरि भक्ति बिन

ज्ञान की स्थिति वैराग्य के बिना नहीं हो सकती वैराग्य कृपा व भक्ति के बिना प्राप्त नहीं होता मन में प्रेम लग्न भावना नहीं तो कल्याण होना निश्चित नहीं, अपने मन को आप समझाना :–

काम क्रोध ऐं लोभ मोह जो
अन्दर में मातामु मचे।
चितांउनि जे कठिन चक्कर
में राह न काई नजर अचे।
शरणि वठिजि पूरे सत्गुरु
जी सत्गुर राह बुधाईन्दो।
धीरज धरि मन मुंहिजा
सत्गुरु कार्ज बणाईन्दो।
बेड़ा पारि लगाईन्दो।

परमात्मा की कृपा से देवं दुलर्भ मानव जीवन प्राप्त हुआ है सन्तों की कृपा से सत्संग व गुरु कृपा से नाम का सौदा मिला –

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा पाय
न जिंह परलोक संवारा
बालापन खेलन गया
यौवन भोगे भोग
बुढ़ापन में बाढ़िया
आसा तृष्णा रोग।
जरा उपाय न हो सके
जरा आयु के मांहि।

थोड़ा जीवन कठिन कार्य को करना मन को नाम स्मरण से जोड़ना **आज कहे मैं काल करूं काल, कहे फिर काल, आज काल के करत ही अवसर जासी चाल।**

जन्मोत्सव की खास बातें

११ मई २००३, को भव्य शोभायात्रा - कानपुर महानगर का सिन्धी समाज सभी के मुख में यही बात-आज तक ऐसी शोभायात्रा जिसमें सादगी व भव्यता का अनोखा संगम था, नहीं देखी।

अति उल्लास के साथ कानपुर महानगर में पूज्य सिन्धी पंचायतों, संस्थाओं, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, प्रेमियों द्वारा शोभा यात्रा का स्वागत पुष्पवर्षा परसाद-शरबत जल वितरण के साथ किया जा रहा था।

अलवर से आई शहनाई पार्टी द्वारा शोभायात्रा के अतिरिक्त १२ से १६ मई तक प्रतिदिन प्रातः ५ बजे मंगलकारी धुनों के साथ सद्गुरु महाराज की स्तुति की जा रही थी।

प्रतिदिन सत्संग समाप्ति के पश्चात् आम भण्डारे में कानपुर वासियों ने देश विदेश से आये सैकड़ों प्रेमियों के साथ सश्रद्धा पावन परशाद ग्रहण किया।

मेले में सत्संग सभा में सम्मिलित समस्त स्थानीय प्रेमियों को पाखर भी सत्संग समापन के तुरन्त बाद परशाद के साथ वितरित की गयी।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्तों के निर्देशन में कानपुर आश्रम के व्यवस्थापक सन्त घनश्यामदास जी की देखरेख में प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली कानपुर द्वारा कानपुर महानगर के सिन्धी समाज के सहयोग से समस्त सेवा कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न किये गये।

प्रेम प्रकाश सन्देश के कानपुर सदस्यों में से लक्की ड्रॉ निकाल कर दो भाग्यशाली सदस्यों (अशोक टेकवानी व पूजा गारमेन्ट्स) को आचार्य श्री के चित्रयुक्त सोने के लाकेट उपहार में प्राप्त हुए।

मन पर साक्षी होय तुम
धर विवेक वैराग
कहे टेऊँ जे दोष है तांका
करो त्याग
ये मन बड़ा चंचल है
जितना इसे कैसे समझाऊँ
सत्गुरु तेरे चरनों की गर
धूल जो मिल जाये
सच कहिती है दुनिया
किस्मत ही बदल जाये।
सतगुरु में तूं रखु विश्वासु
सत्गुर तुहिंजा कार्ज
संवारे।

द्रोपती प्रहलाद के इतिहास से हमें यही ज्ञात होता है:–

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम ते होय प्रगट मैं जाना।।

प्रभु मार्ग में कष्ट तो आते हैं जैसे प्रहलाद भक्त को आये पहाड़ से गिराया। आग में जलाने का यत्न किया गया परन्तु दृढ़ विश्वास से प्रभु ने आकर रक्षा की। आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज को लोगों ने सताया, निंदा की परन्तु प्रभु की परीक्षा समझकर शांति में रहकर

लीला समझकर सहते रहे व प्रेमियों को भी बताया **सहिबो तदहिं लहिबो** इन्हीं शब्दों के साथ प्रवचनामृत को दिया विराम सद्‌गुरु महाराज जी ने, मन्त्रमुग्ध प्रभु प्रेम में मोहित, नीरव सत्संग सभागार में बैठे अपार प्रेमियों की दशा का वर्णन तो इस लोह लेखनी के बस की बात नहीं है। हाँ इतना जरूर कहा जा सकता है कि इस अवर्णनीय आनन्द में भला कौन नहीं सदैव डूबा रहना चाहेगा।

सत्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के ७३ वें जन्मोत्सव के तीसरे दिवस की सत्संग सभा का आँखों देखा विवरण –

आज प्रातःकाल से आये हुए प्रेमियों के हृदय में विशेष उल्लास था। प्रातःकाल ६ बजे से सत्संग सभा का आरम्भ प्रार्थना से किया गया। जिसमें सन्त परसराम, हरीश कुमार व महेन्द्र कुमार ने भाग लिया। तत्पश्चात् संत नरेश कुमार इन्दौर निवासी ने श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीगीता भागवती का सार बताते हुए कहा कि महापुरुषों का जीवन लोकहित, कल्याण के लिये होता है वृक्ष जैसे सर्दी गर्मी को झेलते हुए फल व फूल देते हैं वैसे ही सन्त संसार के कल्याण हेतु कष्ट लेकर शरण आये लोगों को परमात्मा के मार्ग का रास्ता बताकर मिला देते हैं। तत्पश्चात् सन्त हरीओमलाल ने **जोगी त मुंहिजे जीअ जा जानी,** सच्चे जोगी वे हैं जिन्होंने अपने इन्द्रियों सहित मन पर विजय प्राप्त की है। आशा इच्छा तृष्णा वासनाओं से परे सदैव स्मरण चिन्तन के आनन्द अमृत को पाकर उस मस्ती में मस्त रहते हैं।

ना काहू से दोस्ती ना काहू से वैर

सन्त नामदेव जी महाराज (हांगकांग) ने अपने प्रवचन में बताया समझ में सुख नासमझ में दुख है जल पीने वाले की प्यास शांत होगी तैसे ही सन्तों की वाणी सुनने समझने वाले जिज्ञासु को मन की शांति प्राप्त होती है।

राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट।
अन्तकाल पछताएगा जब प्राण जाएगा छूट।

समय हाथ से निकल जाने पर पछताना पड़ेगा। सन्तों के संग से वह रमज माने तरीका युक्ति मिलती है जिससे थोड़े पुरुषार्थ से नाम स्मरण में मन लगाकर यह मनुष्य अपना कल्याण कर लेता है सुनना सुनाना सरल है अपितु करना बहुत कठिन है।

सन्त श्री प्रतापराय मुरैना से पधारे हुए ने अपने प्रवचनों में बताया गुरुदेव के अनन्त उपकार इस जीव पर है सन्तों महापुरुषों के द्वारा भक्ति बल पर यह पृथ्वी टिकी हुई है, सत्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज साहसी, निडर, त्यागी, वैरागी व विश्वास निष्ठा पूर्ण गुरु भक्ती के दैवीय गुणों के साथ सत्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज के परम भक्त थे उनके कुछ प्रसंग प्रवचन में बताए कि मैने उनकी जूती सिलाई कराये तो उन्होंने मुझे २ रु. दिए। कलकत्ते गंगासागर यात्रा करते समस्त प्रेमियों के कपड़े व जूतीयाँ उठाकर संभाल करी। जितने महान थे उतना आप को जाना ऐसे महानपुरुष छिपे रहते हैं।

१६ मई २००३, शुक्रवार - आज जन्मोत्सव के पांचवे दिवस प्रातःकाल सत्संग उपरान्त श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ पाठ साहब भोग स्वामी नामदेव जी महाराज व श्रीमद् भागवत गीता का पाठ भोग श्री संत प्रतापराय जी ने पाया तत्पश्चात् आरतियाँ पल्लव व आम भण्डारा प्रारम्भ हुआ जो शाम ४ बजे तक चलता रहा इस महाप्रसादी का आयोजन बड़े विस्तृत रूप से किया गया। जिससे हजारों की संख्या में प्रेमियों ने भण्डारा प्रसाादी पाया। इसी शाम की सत्संग सभा में सन्त हरीओमलाल, सन्त नामदेव महाराज ने अपने प्रवचनों द्वारा सन्त महिमा को बतलाते हुए कहा–

अति कृपाल निद्रोह चित सहन शीलता सार।
शम दम आदि अकाम मति मृदुल सर्व उपकार।।
कहे टेऊँ संसार में बात यही है सार।
भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार।।

आगे बताया कि सत्संग के समय शान्त होकर सन्तों के वचनों को सुनें लेकिन व्यवहार करते शान्त नहीं रहना है यह याद करना।

पूज्य सत्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में कहाः–

सन्त सच्चा सामीअड़ा अङणि मुंहिजे अजु आया।
दर्शन सां मन मुंहिजे आनन्द मंगल छाया।
सन्त गुरु परमात्मा साचे संगी जान।
कह टेऊँ इन तीन से कर ले प्रेम सुजान।
सन्त राम में भेद नहीं सन्त राम स्वरूप।
कहे टेऊँ रट राम को भये राम के रूप।

पूज्य सत्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के

जन्मोत्सव यज्ञ की आज पूर्णाहुति है पल्लव का दिन है पल्लव का अर्थ है अरदास प्रार्थना में क्या मांगे जो स्थिर होवे बाकी तो सभ देखते ही चला जाता है। पुत्र धन पदार्थ का संग एक–एक करके छूट जाता है।

भृतहरि का संवाद बतलाते हुए कहा कि राजा भृतहरि का प्रेम रानी के साथ अमृत फल दिया रानी को, रानी ने सहस को दिया। सहस ने वेश्या को, वेश्या ने सोचा मैं फल खाकर क्या अमर होवूं यह राजा खावे तो प्रजा की सेवा, रक्षा करे, फल फिर से राजा के पास आया इसी फल के वापस आने से राजा सारी बात जानकर सोचा कि इस संसार में सब प्रीत झूठी है। वैराग्य जीवन में आयाः–

चाम जाम का है यह नाता। ना तो किससे कौन निभाता।।

आगे बताया कि तीनों अवस्था व्यर्थ में चली जाती है–

बालापन खेलन गया, यौवन भोगे भोग।
वृद्धापन में बाढ़िया आसा तृष्णा रोग।

नाम को अपने जीवन का आधार बनावें।

अन्त काल में आकर जबही यम के दूत डरावत है।
शब्द गुरु का याद करने से निकट नहीं वे आवत है।

समय जीवन व श्वास होते कुछ कर लें अन्यथा पछताना पड़ेगा।

तन दे जग जे वहिवारनि में, मनु दे गुर जे वीचारनि में।
ईऐं बेई लोक संवारि तू, पर मालिक खे न विसारि तूं।।

दोपहर १२ बजे आम भण्डारा जो शाम ४ बजे तक चला। शाम की सत्संग सभा में कानपुर के जिलाधिकारी अरविन्द कुमार जी आये। पूज्य गुरुवर को माला पहनाकर नत मस्तक होकर आशीर्वाद प्राप्त की, पूज्य स्वामी जी ने आशीर्वाद पाखर डाली इसके पश्चात् लोक सभा सांसद श्री प्रकाशचन्द जायसवाल भी आये। जिन्होंने पूज्य स्वामी जी, सन्त मण्डली का हार्दिक अभिनन्दन किया व पूज्य गुरुवर को फूलमाला पहनाकर आशीर्वाद लिया। जिन्हें पूज्य स्वामी जी ने आशीर्वाद पाखर दिया। इसी शुभ अवसर पर २८ बच्चों ने जनेऊ पहने व उनके सम्बन्धी सभी लोगों ने भण्डारे में प्रसाद पाया व सायंकाल को ७३वें जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर गुब्बारे आकाश में तथा चिड़िया व कबूतरों को बन्धन मुक्त कर आकाश में उड़ाया गया। इसी समय का नजारा देखा व कहा जाय लिखा जाय कलम को मुख को ताकत नहीं, अपार जन समूह जैसा कि सारे शहर की पंचायत सिन्धी समुदाय के अलावा कई भक्तों प्रेमियों ने आकर भाग लिया। विशेषकर अलवर से शहनाई पार्टी ने आकर धूम मचाई मानो स्वर्ग से किन्नर गन्धर्वों ने भी आकर भाग लिया हो। प्रेमियों के मुख से यही आवाज आई कि ऐसा उत्सव अभी तक यहाँ न हुआ है सारा कानपुर नगर भक्त प्रेमी पंचायती सदस्यों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि यह सब कृपा आचार्य सत्गुरु टेऊँराम महाराज जी की है। **सत्गुरु की कृपा बिना सरे न कोई काज तांते गुरु की शरण ले कह टेऊँ तज लाज, आहिनि तुंहिजे आसिरे मोती तिनिखे मिलाईं मुंहिजा सच्चा सांई राम, आशवन्दी गुर तो दरि आई तो बिन वाह न काई राम** पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया। जयघोष की आवाज से सारा पंडाल गूंज उठा व ७३ पाऊण्ड का केक सर्व सन्तों व श्री गुरुवर के कर कमलों द्वारा काटा गया, दीप प्रज्जवलित किये गये, अन्त में सर्व प्रेमी भक्तों को मेले की स्मृतिस्वरूप पाखर–प्रसाद वितरित किया गया। इसके पूर्व प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान के अन्तर्गत कानपुर के प्रेमियों के उत्सावर्द्धन के लिए यहाँ पर भी कानपुर के सदस्यों को विशेष नम्बर देकर पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर–कमलों से लकी ड्रा निकाल कर दो भाग्यशाली सदस्यों को सोने के लॉकेट आचार्य श्री जी के चित्र मुक्त समारोह में ही स्वामी जी के कर कमलों से दिये गये।

१६ मई २००३ - कानपुर से चलकर अमरापुर वाहन द्वारा श्री इलाहाबाद पहुँच कर श्री राजकुमार के घर पर निवास किया। सांयकाल ६ से ८ तक सत्संग का कार्यक्रम सिन्धी धर्मशाला पर रहा। जिसमें सैकड़ों प्रेमियों ने दर्शन सत्संग का अमृत पान किया। २० मई को प्रातःकाल प्रेमियों समेत महाप्रयागराज स्नान हेतु पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित नौका विहार करने उपरान्त त्रिवेणी के महातीर्थ में स्नान किया। सांयकाल श्री संत जुगतराम जी के आश्रम में पधारे। तारीख २१ मई को इलाहाबाद से चलकर भगवान शंकर के पावन तीर्थ स्थल **काशी** में पधारे। जहाँ कई प्रेमियों ने स्वामी जी का स्वागत सत्कार किया। फूलमालाएँ पहनाकर जयघोष करते हुए शहनाई व बैण्डबाजों के साथ प्रेम प्रकाश आश्रम पर पधारे। तीन दिवसीय वाराणसी प्रवास में कई दूर–दूर के प्रेमियों ने

प्रातः सांय सत्संग दर्शन का लाभ प्राप्त किया। द्वितीय दिवस पर सारी संगति हेतु आम भण्डारा किया गया व २३ मई को सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्मोत्सव के उपलक्ष में दीप प्रज्जवलन कर आरती उपरान्त केक काटा गया व शहनाई वादन द्वारा सभी प्रेमी आनन्द विभोर होकर ऐसा नाचे व गाये कि मानो स्वर्ग वैकुण्ठ का आनन्द छा गया। आप सभी को स्मरण हो कि गत वर्ष पूज्य गुरुवर स्वामी हरिदासराम महाराज जी का ७२ वाँ जन्मोत्सव काशी में ही मनाया गया था। इसी प्रकार काशी यात्रा पूर्ण कर श्री गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली द्वारा प्रस्थान किया गया।

बनारस से सुलतानपुर होते हुए फैजाबाद में भी सत्संग की अमृत वर्षा

ग्राम ग्राम कनि प्रेम प्रचार, ब्रह्मज्ञान जी करनि गजकार,
दियनि नाम संदा त ढंढोरा

संसार के अनन्त जीवों को अविद्या गफलत की निद्रा से जगाते प्रभु परमात्मा का नाम जपाते सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज की महिमा का गान करते हुए **फैजाबाद** की नगरी जहाँ कि एक तरफ शिव नगरी काशी व दूसरी तरफ अयोध्या राम की नगरी बिराजमान है। रामनगर कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम जहाँ कि पूर्व में भक्त शिवनदास ठाकुरी माता सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज के भक्त रहते थे। माना कि जैसे कबीर व लोई जहाँ वे अपनी भक्ती की साख रखे हैं उनके सुपुत्र भावनदास व लाजबाई सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा दिखाये सदमार्ग पर स्वयं चलकर प्रेमियों को भी प्रेरित करते हैं। दो दिवसीय **फैजाबाद** प्रवास में प्रातःकाल व सांयकाल सत्संग अमृत वर्षा से सारे प्रेमियों को आनन्दित किया।

फैजाबाद यात्रा के बाद प्रिय भक्त अशोक की बहिन जो कि **खलीलाबाद** में रहती है उनके घर पर अल्प प्रवास के साथ सत्संग का कार्यक्रम व भण्डारे का कार्य हुआ। तत्पश्चात् सन्त कबीरदास की तपःस्थली व देहावसान भूमि का दर्शन करने हेतु **मगहर** में पधारे। जहाँ सन्त कबीरदास जी के आश्रम संचालन कर्ता के सम्मुख विचारों का लेन–देन हुआ। वहाँ दर्शन हुए जहाँ कि सन्त कबीरदास जी की एक तरफ स्मृति स्थल व दूसरी ओर उनकी मजार बनी हुई है। यहाँ पर २० महात्मा रहते हैं व अन्न भोजन का भण्डारा होता है। आए गये अतिथि साधु का सत्कार होता है। वहाँ के वर्तमान महन्त जी इस समय अच्छा कार्य संभाले हुए हैं।

मगहर के पश्चात् **गोरखपुर** यात्रा के अर्न्तगत गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज प्रथम बार गोरखपुर पधारे। गत कुछ वर्ष पूर्व सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज भी यहाँ पधारे थे। प्रेमियों के घर पर निवास के साथ सिन्धी धर्मशाला में सत्संग का कार्यक्रम रहा। इन्हीं सत्संग के मध्य गोरख पंथ के अनुयायी पूर्व सांसद स्वामी अवैद्यनाथ जी व महन्त योगी गोपाल गोदिंया निवासी महापुरुषों से मिलाप हुआ। परस्पर मिलन व माल्यार्पण का वह अद्भुत नजारा देखते ही बनता था, बड़े प्रसन्न चित महापुरुष एक दूसरे से मिले। सन्त अवैद्यनाथ जी ने पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के सत्संग उपरान्त अपने प्रवचनों में बताया कि मनुष्य का उद्देश्य मोक्ष पाना है। अन्तःकरण की शुद्धि ज्ञान कर्म उपासना से होती है तालाब में मिट्टी हो जल की धारा बहती हो तथा काई जमी हो तो उसमें सूर्य का प्रतिबिम्ब नहीं दिखता। मल विक्षेप आवरण के उतरते ही आत्म प्रतिबिम्ब में वह परमात्मा का प्रकाश दिखता है आत्मा मन बुद्धि से परे इन्द्रियों का विषय नहीं है अपितु इन सभी को आत्मा का ही बल प्राप्त है।

इन्हीं प्रवचनों के साथ हिन्दू जाति को समन्वय रखते हुए एकता के सूत्र में बॉधने हेतु सम्बोधन करते हुए अपने प्रवचन पूर्ण किये तत्पश्चात् आरती, आम भण्डारे का कार्यक्रम हुआ। पूज्य स्वामी जी द्वारा गोरखपुर यात्रा के अन्तर्गत हिन्दू धर्म ग्रन्थों की सुप्रसिद्ध प्रचार स्थली **''गीता प्रेस''** के दर्शनार्थ सन्तमण्डल व प्रेमियों के साथ गये, जहाँ पर गीता प्रेस के व्यवस्थापक मण्डल द्वारा पूज्य स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया गया। पूज्य स्वामी जी गोरखनाथ भी गये, जहाँ पर महन्त अवैद्यनाथ जी महाराज व अन्य सन्त भक्तों ने पूज्य महाराज श्री का स्वागत सत्कार आत्मीयता के साथ किया। गौरखपुर से **बड़राईच** होते हुये पूज्य स्वामी कानपुर से २८ मई ०३ को हावड़ा जोधपुर एक्सप्रेस में जयपुर के लिये रवाना हुये।

सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का देशाटन

आदर्श नगर अजमेर में सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का वर्सी उत्सव

राजस्थान के **अजमेर** शहर के मध्य स्थित आदर्शनगर कॉलोनी में सत्‌गुरू टेऊँराम महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम जो कि संत शिरोमणी स्वामी माधवदास जी महाराज द्वारा स्थापित दरबार है जो कि पूर्व में हैदराबाद स्थित आश्रम था जहाँ कि प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य सत्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी ने पंचभौतिक देह को परमतत्व में विलीन किया था। उसी समय से यह पुण्य तिथि महोत्सव इस आश्रम पर श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष की अध्यक्षता में विशेष रूप में बड़े विशाल आयोजन के साथ मनाया जाता है। **पुण्य तिथि पर शोभा यात्रा का आयोजन** सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने पुण्य तिथि उत्सव के द्वितीय दिवस पर पूरे आदर्श नगर की परिक्रमा में संत शिरोमणी पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज व आचार्य सतगुरू टेऊँराम जी महाराज व सतगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सतगुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज व गुरुवर स्वामी हरिदासराम जी महाराज जी के मन को मुग्ध बनाने वाले सुन्दर स्वरूप व श्री राम नाम संकीर्तन वाटिका थी जो श्री गुरू महाराज की जयघोष व सुन्दर भजनों का गान करती चल रही थी व जो शोभायात्रा की अनुपम छटा का दर्शन करा रही थी इसी शोभायात्रा के मध्य कई जगह सन्तों व प्रेमियों का स्वागत पुष्पवर्षा के साथ, शरबत जल परसाद आयोजन भी रखा गया था यह शोभा यात्रा आश्रम से ६:३० पर चलकर पुनः ८ बजे आश्रम पर वापस लौटी, तत्पश्चात् सत्संग का आयोजन हुआ, सत्‌गुरू टेऊँराम महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम के समीप ही **स्वामी माधवदास नेत्र ज्योती केन्द्र** का उद्‌घाटन श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज, संत शिरोमणी पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज एवम् उपकारी महान पुरुष स्वामी हिरदाराम जी महाराज बैरागढ़ भोपाल के कर कमलों द्वारा किया गया। प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्श नगर द्वारा बताया गया कि इन्हीं महापुरूषों द्वारा नेत्र ज्योती केन्द्र की हमें प्रेरणा मिली, प्रति वर्ष यहाँ पर नेत्र शिविर लगाए जाते हैं आज यह कार्य अपने यहाँ अपने ही नेत्र ज्योति केन्द्र के अनुसार सुविधा पूवर्क किया जा सकेगा।

इस नेत्र ज्योती केन्द्र के अर्न्तगत ऑपरेशन थियेटर व आगन्तुक हाल व ऊपरी मंजिलों पर १०-१० कमरे बनाए गये हैं एक बड़ा हाल भी बनाया गया है

प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर में शिव दर्शन पूजन भक्त श्री शंकरलाल द्वारा बताया गया कि प्रति वर्ष सत्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पुण्य तिथि महोत्सव पर पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज के निवास कुटिया के पास नीचे धरातल (गुफा) में शिव दर्शन होता है जो कि चन्द्र दिवस पर प्रातःकाल ४ बजे से ५:३० तक दर्शन होता है व पूजन किया जाता है मानो साक्षात् शंकर भगवान आकर हमें दर्शन देते हैं इस दर्शन हेतु पूरे शहर से सैकड़ों प्रेमी आते हैं व दर्शन पूजन कर लाभ प्राप्त करते हैं यह दर्शन-पूजन के लिये वर्ष में केवल इसी एक दिन को गुफा का द्वार खौला जाता है। सन्त शिरोमणी स्वामी माधवदास जी महाराज की समाधी स्थल इसी प्रेम प्रकाश आश्रम के पीछे प्रांगण मध्य बड़ा सुन्दर समाधी स्थल है जहां पर कि पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज जी के पंचभौतिक शरीर को अग्नि समाधी दी गयी थी वहाँ पर प्रतिदिन आरती पूजन के साथ भजन सत्संग का कार्यक्रम प्रातःकाल अमृत वेला में किया जाता है पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज आचार्य सत्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सन्त मण्डली के एक महान सन्त थे जिन्होंने गुरू भक्ति सेवा आज्ञा का पालन कर आये गये अतिथि सत्कार सेवा सन्तो के माध्यम से अजमेर शहर के मध्य सत्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज की भक्ति का गुणगान करते हुए अपना अच्छा स्थान बनाया। आज भी दूर-दूर के भक्त प्रेमी दर्शन हेतु आते हैं व भोजन प्रसाद ग्रहण करते है प्रेम प्रकाश आश्रम स्वामी माधवदास ट्रस्ट द्वारा प्रति वर्ष दो बार सामूहिक विवाह का आयोजन भी किया जाता है तथा प्रतिमाह सिन्धी समाज की गरीब, असहाय वर्ग को सहायता प्रदान की जाती है इसी पुण्य तिथि महोत्सव में गरीबों की सेवा में कैश (दानदाताओं द्वारा) तथा आश्रम की ओर से चादर तौलिया साड़ी नैपकिन के

साथ दैनिक उपयोगी चावल दाल अनाज आदि सामान भी दिया गया।

अजमेर प्रेम प्रकाश आश्रम पर आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पुण्य तिथि के अवसर पर पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा प्रेमियों को सत्उपदेश करते हुए बताया–

गफलत में न गंवाइये मानुष देह महान।
कहे टेऊँ तुम जागके भजले श्री भगवान।।

मानव का जीवन अनमोल मिला है जिसमें स्वासों की पूंजी परमात्मा ने दी है इन्हीं स्वासों के द्वारा नाम स्मरण करना ही सार्थकता है सन्त महात्माओं का ज्ञान है

दो बातन को भूल मत जे चाहो कल्याण।
नारायण इक मौत की दूजा श्री भगवान।।

एक महात्मा एक हाथ से रोटी पका रहा था परन्तु दूसरे हाथ से खाता जा रहा था। जिसका सार कि इस जीवन का पल का भरोसा नहीं।

बाबा दादा कादे वियड़ा धरतीअ अन्दरि दाखिल थियड़ा
जीजल प्रवन्दी पवे चलि चलि
माता दे खुशियां मोकल।

माता के आशीर्वाद सन्तों का संग गुरु के उपदेश से आचार्य जी की भक्ति इतनी महान हो गयी। अपने आप को जगाना जानना ही अपने अपने पर कृपा करना है बाद में औरों की, भगवान् की कृपा सरलता से प्राप्त होगी।

पहले अपने आप पर करत कृपा जन जोय।
कहे टेऊँ तां दास पर सभकी कृपा होय।।

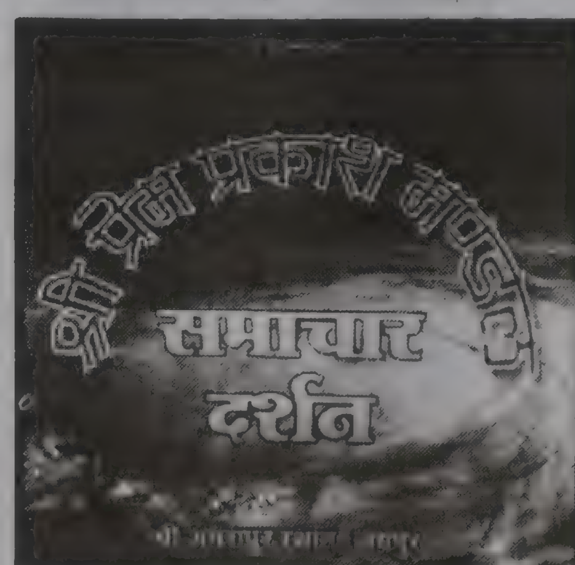
सन्त गुरु परमात्मा के संग से लाभ सच्चा प्राप्त होगा ये जीवन के सच्चे साथी हैं और साथ धन परिवार, मकान, महल का साथ धीरे–धीरे छूट जायेगा।

मिठो नालो स्वामी टेऊँराम जो
जहिं जापु जपायो सत्नाम जो
बेड़ो पारि उकारियो आम जो
वञी जोगी वेठो हो झंग में संगी साथी न कोई
संग में रुह रंगिंजी वयो राम-रंग में
हुई ओऽम सोऽम धुनी अंग में
भुली भास वयो ताम आराम जो
जिसे दुनिया ठुकराये उसे तुम अपनाते हो
मंझधार में जग छोड़े तुम साथ निभाते हो
इस निर्बल बालक के तुम साथ सदा रहना
मेरे सत्गुरु टेऊँराम मुझ पर कृपा करना
भूले ना नाम तेरा बस इतनी दया करना

सन्त शिरोमणी पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों के अन्तर्गत बताया– कि कर्म करने, धर्म का आचरण करने से जीवन की श्रेष्ठता होगी, **कर्म करण में करि ना देरि जे चांही कल्याणु तूं पहिंजो।** इस मन पर विश्वास न करना चाहिये। पाप के संकल्प को विचारेंगे देरि करेंगे तो बच सकेंगे परन्तु शुभ कर्म को करने में देर न करनी चाहिए।

संत हरिओमलाल (यात्रा से),
मोहन शिवनानी अजमेर से

प्रेम प्रकाश मण्डल
(समाचार दर्शन)



श्री अमरापुर स्थान द्वारा चैत्र मेले मेले के अवसर पर रिलीज की गई, प्रेम प्रकाश मण्डल समाचार दर्शन वी.सी.डी. कैसेट जिसमें हरिद्वार मेला, मुम्बई मेला, कोटा स्वर्ण जयन्ती बसन्त पंचमी, शिवरात्रि, होली, स्वामी गणेशानन्द जयन्ती ग्वालियर आदि आश्रमों के ३–४ चार माह के भीतर होने वाले कार्यक्रम को • ews Tek बनाकर प्रस्तुत की गयी है।

"प्राप्ति स्थल"
श्री अमरापुर स्थान
एम.आई.रोड़, जयपुर

श्री अमरापुर समाचार दर्शन

आचार्य श्री के परम भक्त मर्यादामूर्ति सद्गुरु हरिदासरामजी महाराज का 73 वां जन्मोत्सव सम्पन्न

(७३ दीप प्रवज्जलन, रंगोली, महाराज श्री की विशाल प्रतिमा दर्शन, कैसेट विमोचन)

त्याग तपस्या तेज पुनि, गुरु भक्ति अभिराम।
निर्भयता का नाद बजाया, सद्गुरु हरिदास राम।।

सांसारिक जीवन की भूतकालीन घटनाओं की मानसिक पटल पर छाप पड़ती है उन स्मृतियों को कुरेदने से मन में सुख व दुख की अनुभूति होती है। लेकिन महापुरुषों और सत्गुरु की पावन स्मृतियाँ अद्भुत होती है। उनको याद करके मन में एक विलक्षण आनन्द का संचार होता है। क्योंकि सत्चित् आनन्द स्वरूप महापुरुषों के ससंर्ग से एवं उनके चरित्र श्रवण से उनकी जीवन गाथा याद करने से मन में अद्भुत प्रकाश का संचार होता है। मृत मन में मानो प्राणों का संचार होता है।

ऐसे ही विलक्षण मर्यादा मूर्ति आचार्य श्री के परम भक्त सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज का ७३ वां पावन जन्मोत्सव श्री अमरापुर धाम की धरा पर सन्त मण्डल के सानिध्य में १२ मई से १६ मई २००३ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, सतं मनोहरलाल जी, संत हंस प्रकाश जी, संत दया प्रकाश जी, संत मोनूराम जी आदि संत वृन्दो ने गुरु महाराज की महिमा का वाख्यान किया।

१२ मई २००३ :- आज श्री दरबार में प्रातःकाल से ही प्रेमीयों के आने का सिलसिला लगा हुआ था। आज श्री दरबार की अनुपम सुन्दरता भी कम नहीं थी। सत्संग मंच पर गेरुनुमा वस्त्र को बाँधकर प्रकोष्ठ में आचार्य श्री, इष्टदेव लक्ष्मी नारायण, सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु शांतिप्रकाश जी महाराज व सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज की प्रतिमा को विराजित किया गया था। जिनके मुखमण्डल की आभा प्रेमियों को अपनी ओर बरबस आकर्षित कर रही थी।

वहीं नीचे समाधि स्थल पर भी प्रेमीगण मंत्रगुग्ध होकर खड़े थे सफेद पत्थरों पर सजे विभिन्न रंगों के पुष्पों की सजावट भी किसी कोने से कम नहीं थी, जो कि प्रेमीगण को अपनी ओर आकर्षित न कर सके।


महानगर 3

अमरापुर में भंडारा

इतने अद्भुत दर्शनों से नेत्रों की तृप्ति करने के बाद सत्संग गंगा से मन की तृप्ति करने के लिए सत्संग मंच पर चलते हैं।

प्रातःकालीन प्रार्थना के स्वर सम्पूर्ण श्री दरबार में गुंजित हो रहे थे। प्रार्थना के पश्चात् संत श्री ने अपने मुख से सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज के गुणों का वख्यान किया फिर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद् भगवत गीता के पाठों का शुभारम्भ करके आरती व धुनि के पश्चात् प्रातःकालीन सत्संग की समाप्ति हुई। इसी प्रकार सायं ५ बजे से पुनः सत्संग गंगा की शुरुआत हुई। जिसमें संत श्री ने स्वामी जी की महिमा का गुणगान करते हुए भजन गया।

स्वामी हरिदास राम जी आये,
सांई सबके दिल में समाये।
सत्यव्रतधारी पर उपकारी लग्न हरि से लाये,
नित् धर्म के मार्ग चलकर, सबको सुख पहुँचाये।।

इसी तरह १३ से १५ मई तक प्रतिदिन प्रातः व सायं कालीन सत्संग गंगा होती जिसमें स्वामी जी की महिमा का गुणगान व उनके अमृत प्रवचनों का कैसेट्स चलाया जाता था। इसी के अन्तर्गत स्वामी जी की नई प्रवचन कैसेट

"**क्या मुक्ति सम्भव है**" का विमोचन भी हुआ।

१६ मई २००३ :- आज त्याग व तप की मूर्ति सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज का पावन अवतरण दिवस था। प्रांतः से ही श्री दरबार में प्रेमियों के आने का सिलसिला लगा हुआ था। आज मंच पर बहुत ही आकर्षक सजावट की गई थी। सत्संग मंच के मध्य में सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज की विशाल प्रतिमा लगाई गई थी। उसके ऊपर लगाई गई पुष्पों की माला को देखकर ऐसा प्रतीत होता था। जैसे यह स्वामी जी के लिये ही बनी हुई है। उसके पास में ७३ दीप प्रवज्लित किये गये और उनके आस–पास की सजावट बड़ी ही मनमोहक लग रही थी।

निर्धारित समय पर सत्संग गंगा की शुरुआत फिर शुरु हुआ स्वामी जी के पवित्र जीवन गाथा का गुणगान। सन्त महात्माओं ने स्वामी जी की महिमा का वख्यान किया। तत्पश्चात् पाठों का भोग व आरती हुई।

इसके बाद सभी ने मिलकर स्वामी जी के जन्मोत्सव पर बधाई गीत गाये।

इतने मधुरकारी भजनों का सिलसिला शुरु हुआ तो प्रेमीगण अपनी सुध–बुध भूलकर हाथों से करताल व पैरों से नृत्य करने में व्यस्त हो गये।

श्रद्धालुगण व सन्तगण गुरु महाराज के जन्मोत्सव में इतने मस्त थे कि समय का भान ही न था। आखिर शिवोऽम की धुनि लगाकर सत्संग गंगा की समाप्ति हुई और आम भण्डारा शुरु हुआ। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

जन्मोत्सव के समस्त कार्यक्रमों को गुलाबी नगरी के समाचार पत्र व इलेक्ट्रोनिक मीडिया में रोज बताया जाता था। **गुड़िया भरत जेठवानी,** जयपुर से

सांगानेर कॉलोनी में सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज का जन्मोत्सव मनाया गया

जयपुर शहर में स्थित "सिन्धी कॉलोनी" सांगानेर में श्री प्रेम प्रकाश सत्संग भवन में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्मोत्सव ! सभी प्रेमीगण सबेरे से ही सेवा के कार्य में लगे हुए थे। सभी श्रद्धालुओं के मन में खुशी की लहरें दौड़ रही थी। प्रेम प्रकाश सत्संग भवन की महिला मण्डली ने अमरापुर स्थान की सन्त मण्डली के स्वागत में बड़ा ही सुन्दर भजन गाया।

गुरु पाण आया फेरा पाए।
दिल खुश थीं मुहिंजी अजु आहे।।

इसके पश्चात् संत मोनूराम जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि–

मेरे सत्‌गुरु हरिदासराम, आए धरती पर सुखधाम।
जिनके पावन चरणों में, पल-पल मेरा है प्रणाम।।

उन्होंने बताया कि जब मानुष चोला पाया है तो उसको सार्थक भी करना चाहिए। हर–समय मुख से राम–नाम का सुमरन करना चाहिए।

राम नाम जपते रहो, जब तक घट में प्राण।
राम नाम के बिना, जीवन वृथा जान।।

उन्होंने बताया कि किस तरह से सत्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने देश–विदेश में प्रेम प्रकाश धर्म का प्रचार किया। वह किसी भी कार्य को छोटा बड़ा नहीं समझते थे। वह हर किसी कार्य को गुरु की आज्ञा मानकर किया करते थे। संत मोनूराम जी ने अन्त में अपने प्रवचनों में बताया कि ऐसे महापुरुषों के मार्ग का सदैव अनुसरण करना चाहिए। इसके पश्चात् संत मण्डली एवं श्रद्धालुओं ने मिलकर सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्मोत्सव मनाया। केक काटकर, संत मोनूराम जी ने वाधायू–वाधायू लख–लख वाधायू गुरुअ जे जन्म जूं लख–२ वाधायु भजन गाकर सभी भक्तगणों को सत्‌गुरु के जन्मोत्सव की बधाईयाँ दी। इसके पश्चात् एक १२ वर्ष की बालिका ने बड़ी ही मधुर आवाज में सत्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज अमृतवाणी के कुछ दोहे प्रस्तुत किये। संत मोनूराम जी ने सभी श्रद्धालुओं से निवेदन किया कि वह सभी दोहे याद करें तथा अपने बच्चों में भी अच्छे संस्कार डालने के लिए उन्होंने भी दोहे याद करावें। प्रेम प्रकाश सत्संग भवन में स्टाल भी लगाई गई। जिसमें मुख्य रूप से सत्‌गुरु हरिदासराम जी महाराज द्वारा रचित "**सत्य की खोज**" पुस्तक "**स्वामी टेऊँराम की अमर प्रेम कहानी**" कैसेट, "**नित्य-नियम प्रार्थना**", "**गुरु आराधना**", "**गुरु वन्दना**" आदि सभी वस्तुओं को रखा गया, अन्त में पल्लव पाकर सत्संग का समापन हुआ। ***रेखा गुरुनानी,*** जयपुर से

सदगुरू स्वामी हरिदासराम जयन्ती समाचार

मुम्बई :- खार एवं माहीम स्थित श्री प्रेम प्रकाश आश्रमों में सदगुरू स्वामी श्री हरिदासराम जी महाराज का जन्मोत्सव बड़े धूम धाम के साथ संत सुन्दरदास जी के सानिध्य में मनाया गया, १२ मई का दिन प्रेमियों के लिये मंगलकारी दिन था, आज सदगुरू एव भग़वान के अलौकिक शोभा से परिपूर्ण विग्रहो की विधिवत पूजा आरती के पश्चात श्रीमद्भगवत गीता एंव सुग्रंथ श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ रखा गया़ आश्रम पर मंदिर की अद्वितीय शोभा से गुरू भक्त प्रेमीयों का मन बाग बहार हो गया, प्रतिदिन सुबह शाम सतसंग में सदगुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज के आचरण एंव उपदेशों लीलाओं का गुणगान का भव्य आयोजन चलता रहा। संत लक्षमण दास जी ने गुरूदेव के मधुर मधुर भजन गाकर प्रेमीयों को आनन्दित कर दिया, संत सुन्दर दास जी ने सार गर्भित वाणी में बताया सदगुरू हरिदासराम जी महाराज के आचरण एंव उपदेशों को आत्मसात करने वाला निश्चय ही अपने जीवन को सफल करेगा, उत्सव में पाँचो दिन सतसंग भण्डारा चलता रहा मुम्बई में दूर दूर से आये प्रेमियों ने भी जन्मोत्सव में भाग लिया ।

आशा हीरानन्दानी मुम्बई से

इन्दौर - प्रेम प्रकाश आश्रम काटजू कॉलोनी में सदगुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज के जन्मोत्सव पर पहले दिन ११ मई को श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ और श्रीमद् भगवत् गीता के पाठ सन्त शम्भू प्रकाश जी के सानिध्य में आरम्भ हुए, दरबार में सदगुरू स्वामी हरिदासराम महाराज जी का मन्दिर बहुत ही सुंदर रूप में सजाया गया था और पाँचों दिन गुरू महाराज की कैसेट संत्सग सरिता है वह चलायी गई। गुरू महाराज ने अपने मुखारविन्द से बहुत ही अच्छी तरह प्रेमीयों को (कैसेट के माध्यम से) समझाया स्वामी जी बताते हैं कि सेवा किस तरह करनी चाहिए **सेवा धर्मों: परम धर्मो:।**

सदगुरू स्वामी टेऊँराम महाराज भी कहते है **निष्कामी निर्मान हो, सेव करत जन जोय कह टेऊँ तिसपर सदा भगवन प्रसन्न होय** ज़ो निष्काम और निर्मान होकर सेवा करता है उस पर भगवान भी प्रसन्न हो जाते है और मोक्ष पद दिलाते हैं अब आखिरी दिन जब आया गुरू महाराज के जन्म का तो पाठों का भोग पड़ा और सत्संग की बड़ी धूम मची, अंत में भडारा हुआ जिसमें हजारों की संख्या में प्रेमियों ने प्रसाद ग्रहण किया सद्गुरू महाराज की याद तो सभी को आती है पर जब सच्चे मन से प्रार्थना करो तो वे थोड़ी भी देर नही करते कहा गया है ना।

इक पलक भी मन ये मेरा तुझको ना भूले
मुरझाना दुख में मनुआ, सुख मे ना फूले
याद में गुजरे मेंरी, हर सुबह और हर शाम

(भोला प्रेम प्रकाशी)इंदौर से

इसी प्रकार से **गोन्दिया** आश्रम पर स्वामी टेऊँराम जन कल्याण ट्रस्ट द्वारा सन्त जीतू जी के सानिध्य में जन्मोत्सव मनाया गया। इसके अतिरिक्त देश विदेश के अनेक आश्रमों में जन्मोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया जाने के समाचार मिले हैं।

निवाई ग्राम में बही सत्संग की बहार

निवाई :- जयपुर से ६०–७० कि. मी . की दूरी पर स्थित एक छोटा सा निवाई ग्राम जहाँ सैकड़ो गुरू भक्त प्रेमी निवास करते है। कई वर्षो से हदय में तमन्ना थी कि हमारे छोटे से गाँव में श्री अमरापुर संत मण्ड़ली का आगमन हो। अनेक बार आग्रह करने पर १६ मई २००३ को श्री अमरापुर स्थान से संत हंसप्रकाश जी, संत मोनूराम जी, विद्यार्थी गण व कुछ प्रेमीगण सायंकाल एक अल्प प्रवास पर निवाई गांव पहुचे। सभी प्रेमीयों ने सन्त मण्डली का भाव पूर्ण स्वागत सत्कार किया। तत्पश्चात् सिन्धी कॉलोनी स्थित एक भव्य भवन में सत्संग का आयोजन हुआ।

सन्तों द्वारा अमृत वाणी सुनकर सभी प्रेमी गद–गद हुये, अन्त में पल्लव सत्नाम साक्षी धुनि के साथ सत्संग की समाप्ति की गई। इसी के साथ वहाँ बुक स्टाल भी लगाया गया, प्रेमीयों ने बड़े श्रद्धा के साथ महाराज श्री के साहित्य कैसेट आदि प्राप्त किये।

रामचन्द्र करनानी निवाई–जिलाटोंक

श्री अमरापुर समाचार दर्शन

आचार्य श्री जी की ६1वीं पुण्यतिथि सम्पन्न

बच्चों द्वारा दोहा स्मरण प्रतियोगिता का पाठ

सत्य सनातन धर्म का प्रचार करने के लिये सिन्धु देश के खण्डू ग्राम में सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अवतार धारण किया था उनके द्वारा ही प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना हुई थी। अपने अनूठे जीवन से अनन्त जीवों का प्रेरणा स्त्रोत बनकर इस युग के एक प्रवर्तक हो गये।

महाराज श्री ने लोकोद्धार के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। ऐसे महापुरुष गुरुवर आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ६१ वीं पुण्यतिथि श्री अमरापुर स्थान जयपुर में रविवार १ जून से ५ जून गुरुवार तक महाराज श्री की अध्यक्षता में मनाया गया।

१ जून २००३, रविवार आज प्रातः काल ही श्री दरबार में प्रेमीगण के आने का सिलसिला शुरु हुआ। सौम्य व शांत वातावरण में गुरु प्रार्थना के मधुरित स्वर का उच्चारण सुनकर प्रेमियों का दिल प्रेम के प्रवाह में डुबकी मारने के लिए उत्साहित हो रहा था।

मधुरकारी प्रर्थना के के साथ जैसे ही गुरुमुख द्वार पर प्रवेश किया तो नयनाभिराम दर्शन की तृप्ति से नेत्र आनन्दित हो उठे। विशाल सत्संग मंच पर पूर्वानुसार एक प्रकोष्ठ जिसमें विराजित थी इष्टदेव लक्ष्मी नारायण, आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्‌गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की तैलीय प्रतिमायें जो पुष्पों की सजावट द्वारा अतिशोभित लग रही थी। वहीं श्री मन्दिर व समाधि स्थल की आभा भी प्रेमियों के प्रेम प्रवाह में दुगुनी वृद्धि कर रही थी।

सत्संग परिसर प्रेमियों से भरा हुआ था। पर जैसे ही गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज मंच पर आसीन हुये पूरे सत्संग परिसर में शान्ति व्याप्त हो गई। प्रार्थना के पश्चात् महाराज श्री की अध्यक्षता में श्री मद्‌भागवत गीता व प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहब रखे गये और विभिन्न सन्तों ने अपने अमृत प्रवचनों की वर्षा की। तत्पश्चात् महाराज श्री ने पुण्यतिथि का शुभारम्भ करते हुये अपनी मृदुल वाणी में आचार्य श्री की महिमा का गुणानुवाद करते हुये भजन गाया–

अमर कलम से लिखी जाएगी, आपकी अमर कहानी।
सिन्धु देश के स्वामी आप थे, टेऊँराम गुण ज्ञानी।।

स्वामी जी ने अपनी वाणी को जैसे ही विराम दिया तो सोलह शिक्षायें व आरती बोलकर सत्संग की समाप्ति हुई। इसी प्रकार शाम को भी सत्संग गंगा की शुरुआत हुई जिसमें भाग लेकर सत्संग का लाभ उठाकर प्रेमी अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे थे।

इस प्रकार ४ जून तक हर रोज आचार्य श्री पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सन्तों के अमृत प्रवचनों की वर्षा होती रही।

गुरुवार, ५ जून २००३ आज एक तो आचार्य श्री के पुण्यतिथि उत्सव की समाप्ति वह दूसरा आचार्य श्री के परमशिष्य सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज के अवतरण का दिवस गुरुवार था। प्रेमीगण अगाध श्रद्धाभाव मन में लिये श्री अजमेर धाम की धरती पर आने के लिये लालायित हो उठे।

नित्य नियम प्रार्थना के पश्चात् विभिन्न सन्तों ने अपने अमृत प्रवचनों में स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डाला और अनकी स्मृति में मधुरकारी भजन गाये।

स्वामी टेऊँराम आये, जिन सोये जीव जगाये।
स्वामी टेऊँराम आ जियरो रे, मता समझो वियड़ो रे।।

हमें यह नहीं सोचना चाहिये, स्वामी जी का शरीर नहीं है तो वह हमारे बीच नहीं हैं। वह हमारे बीच हमेशा रहेंगे। वह तो सदैव अजर अमर हैं उनके द्वारा दिये गये उपदेश, शिक्षायें, नाम, ज्ञान, युग युगान्तर तक कायम रहेगा हमें उनके पदों का अनुसरण करना चाहिए।

सन्तों के अमृत प्रवचनों के पश्चात् पाठों का भोग डाला गया व आरती बोलकर सत्संग गंगा की समाप्ति हुई इसके पश्चात् आम भण्डारा शुरु हुआ। जिसमें प्रेमियों ने प्रेम पूर्वक प्रसाद ग्रहण किया।

इस वर्सी उत्सव में स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के अतिरिक्त स्वयंप्रकाश जी, संत हंसप्रकाश जी, संत दयाप्रकाश संत मनोहरलाल जी, संत नामदेव जी, संत नोमीनाथ, सन्त मोनूराम जी आदि सन्तों ने भाग लिया।

गुड़िया-भरत जेठवानी, जयपुर से

श्री अमरापुर स्थान द्वारा आयोजित-सभी भक्तजनों के लिये

दोहा स्मरण प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता के लिये जयपुर समेत सभी स्थानों में भारी उत्साह देखा जा रहा है ऐसे समाचार हमारे कार्यलय के प्राप्त हो रहे है।

अब आप २५ जून बुधवार तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त नीचे लिखे केन्द्रो पर दोहे याद करके सुना सकते हैं सभी भाग लेने वाले प्रतियोगियों के नाम जुलाई अंक में प्रकाशित किये जावेंगे। आप स्वंय भी याद करें घर में, पड़ौस में सभी को सांई टेऊँराम अमृत वाणी के दोहे याद करने के लिये प्रेरित करें इसके लिये सांई टेऊँराम अमृत वाणी कैसिट या प्रेम प्रकाश संदेश का मई अंक देखे। सभी आश्रमों के संचालक सन्त श्री व प्रतिनिधियों से निवेदन है कि अपने अपने नगर में दोहे स्मरण करने वाले प्रतियोगियों से दोहे सुन कर उनके नाम शीघ्र ही केन्द्रीय कार्यालय श्री अमरापुर स्थान एम.आई.रोड़ जयपुर भेजें जिससे प्रतियोगियों के पुरस्कार व प्रमाण पत्र आपको भेजे जा सकें अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें (१) सन्त मोनूराम जी, 0141-2372423,2372424 (२) श्री बी. डी. टेकवानी, 0141-2250259

दोहे सुनाने के स्थान

१. संत नन्दलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार
२. संत लालूराम, प्रेम प्रकाश धाम, दिल्ली
३. संत श्यामलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, कोटा
४. संत शम्भूलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, इन्दौर
५. संत संजय, मीरा कृष्ण मन्दिर, बडौदा
६. रमेश राजपाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, सूरत
७. मोहन शिवनानी, लौगियां मौ०, दिल्लीगेट अजमेर
८. महेन्द्र प्रेम प्रकाशी, सीकर
६. डॉ. कैलाश बदलानी, टोंक
१०. भगवन्तीदीदी, प्रेमप्रकाश आश्रम केदारनगर, आगरा
११. सांवल प्रेम प्रकाशी, प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना
१२. मीनू प्रेम प्रकाशी प्रेम प्रकाश मन्दिर, हथीन
१३. सन्त राजूराम प्रेम प्रकाश आश्रम, चित्तौड़गढ़
१४. कार्यालय, प्रेमप्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर
१५. ताराचन्दजी १४/१०२२, हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर
१६. श्री महादेव प्रेम प्रकाशी, प्रेम प्रकाश आश्रम, वाराणसी
१७. संत जीतू प्रेम प्रकाशी, रविकुमार खूबचन्दानी प्रेम प्रकाश आश्रम, गोदियां
१८. दीपा, बालक भजन मण्डली प्रेम प्रकाश आश्रम, नन्द नगर ब्यावर
१६. रतन कुमार चेलारामानी लक्ष्मी मेडीकल स्टोर, मालपुरा, जिला टौंक
२०. सुरेश कुमार मानवानी सुरेश किराना स्टोर, साम्भरलेख
२१. रामचन्द करनानी सिन्धी कॉलोनी, निवाई, जिला टौंक

शास्त्री नगर में गुरु कृपा महिला सत्संग मन्दिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जयपुर ! शास्त्री नगर में स्थित "गुरु कृपा महिला सत्संग मन्दिर" में १६ मई सोमवार को मन्दिर का वार्षिकोत्सव अमरापुर संत मण्डली के सानिध्य में मनाया गया। मन्दिर में सर्व प्रथम ध्वजा वन्दन, पाठों का शुभारम्भ एवं स्वामी स्वयं प्रकाश, संत हंस प्रकाश, संत दया प्रकाश, संत मोनूराम आदि सन्तों ने सत्संग–प्रवचन किया। सत्संग में सभी सन्तों ने गुरु महिमा का वख्यान किया। अन्त में पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति व आम भण्डारे का आयोजन हुआ।

पावन श्री अमरापुर धाम जयपुर में

श्री सांई टेऊँराम जी बाबा का

117 वाँ प्रकटोत्सव

1 जुलाई 2003, मंगलवार से 5 जुलाई 2003, शनिवार

कार्यक्रम प्रतिदिन सत्संग का समय

प्रातः 7:00 से 9:30 तक प्रार्थना–सत्संग–प्रवचन कैसेट–गुरुप्रार्थनाष्टक का पाठ आरती धुनि।

सायं: 5:00 से 7:00 तक भक्ति संध्या–सत्संग–सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप–आरती। समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी

विशेष

1 जुलाई 2003, मंगलवार	: प्रातः 5:00 से 7:00 सद्गुरु टेऊँराम संकीर्तन। प्रातः 7:00 से 9:30 प्रार्थना, सत्संग, पाठों का शुभारम्भ, आरती।
2 जुलाई 2003, बुधवार	: दोहा स्मरण प्रतियोगिता का पुनः स्मरण (सभी भक्तजनों के द्वारा)।
3 जुलाई 2003, गुरुवार	: सायं 6:30 महाआरती (117 दीपों द्वारा)।
4 जुलाई 2003, शुक्रवार	: विशाल बर्फ झांकी।
5 जुलाई 2003, शनिवार	: प्रातः 7 से 12 तक सत्संग पाठों का भोग, पुरस्कार वितरण महाप्रसादी, दीप प्रज्जवलन, बधाई गीत, शहनाई वादन,विशाल भण्डारा। सायं 5 से 7 बजे तक भजन सत्संग–चालीसा पाठ (चौथ महोत्सव) सत्नाम साक्षी, जाप–भारती।

मुख्य आकर्षण :

1. सत्सग हाल में ''आचार्य श्री'' की विशाल झांकी।
2. प्रतिदिन मन्दिर परिसर में 117 दीप प्रज्जवलन।
3. पानी में आकर्षक रंगोली।
4. समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी।

नोट :- ५ जुलाई २००३, शनिवार ''आचार्य श्री'' के पावन प्रकटोत्सव पर सभी भक्तजन दीप प्रज्जवलित कर अवतरण दिवस मनायें।

गुरु तीर्थ स्थल श्री अमरापुर धाम, जयपुर

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

13 जुलाई 2003, रविवार

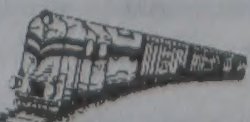
प्रमुख कार्यक्रम

प्रातः 6 से 7 तक श्री मन्दिर में प्रतिमा स्नान, अभिषेक, पूजा–अर्चना, आरती

प्रातः 7 से 11 तक पोषाक पहरान, श्रृंगार, आरती, प्रार्थना सत्संग, प्रवचन।

दोपहर 11 बजे भोजन महाप्रसादी (भण्डारा)।

विशेष : समाधि स्थल पर पुष्प झांकी दर्शन ।



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

15 जून से 19 जून	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
20 जून	2003	तक	यात्रा	☎ 098290–14850
21 जून से 25 जून	2003	तक	मुम्बई	☎ 022–26057711, 26057579
26 जून से 29 जून	2003	तक	अहमदनगर	☎ 098290–14850
30 जून	2003	तक	यात्रा	☎ 098290–14850
1 जुलाई	2003	तक	जयपुर	☎ 0141–2372423, 2372424
2 जुलाई से 5 जुलाई	2003	तक	अजमेर (दिल्ली गेट)	☎ 098290–14850
6 जुलाई से 30 जुलाई	2003	तक	जयपुर, हरिद्वार	☎ 098290–14850
1 अगस्त से 31 अगस्त	2003	तक	नासिक	☎ 0253–2513415, 098290–14850

तीज त्यौहार

15	जून	2003	रविवार	मिथुन संक्रान्ति
17	जून	2003	मंगलवार	गणेश चतुर्थी व्रत
25	जून	2003	बुधवार	योगिनी एकादशी व्रत
29	जून	2003	रविवार	अमावस्या
1	जुलाई	2003	मंगलवार	चन्द्र दर्शन, आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्मोत्सव प्रारम्भ, श्री जगन्नाथ रथ यात्रा।
5	जुलाई	2003	शनिवार	चौथ, सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज अवतरण दिवस (वार्षिक/मासिक)
10	जुलाई	2003	गुरूवार	सद्गुरू टेऊँराम छठी उत्सव, श्री देवशयनी एकादशी व्रत
13	जुलाई	2003	रविवार	श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत, गुरूपूर्णिमा
16	जुलाई	2003	बुधवार	श्री गणेश चौथ व्रत
17	जुलाई	2003	गुरूवार	कर्क संक्रान्ति
18	जुलाई	2003	शुक्रवार	नागपंचमी (मरूस्थले)
25	जुलाई	2003	शुक्रवार	श्री कामदा एकादशी व्रत

कैसेट समीक्षा

मूल्य
सीडी = 30/-
ऑडियो = 20/-



क्या मुक्ति संभव है ?

(सदगुरु हरिदासराम जी महाराज प्रवचन कैसेट)



पूज्य सदगुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के पावन अवतरण दिवस के शुभअवसर पर उनके प्रवचन की नई कैसेट **"क्या मुक्ति संभव है"** रिलीज की गई।

प्रवचन कैसेट में मधु–केटप राक्षसों का भगवान से संवाद, जलन्दर व नारद संवाद, भगवान शिव ने जहर क्यों पीया आदि गुरु रहस्य युक्त प्रवचनों को बड़े मार्मिक रूप से सदगुरु महाराज जी द्वारा समझाया गया है।

कैसेट का नाम : क्या मुक्ति संभव है ?
मूल्य : सीडी 30/-, ऑडियो 20/- रु.
प्राप्ति : श्री अमरापुर स्थान जयपुर व प्रमुख आश्रमों पर उपलब्ध है।

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 117 वां जन्मोत्सव

(दिल्ली गेट, अजमेर में)

विश्व कल्याणार्थ विष्णु महायज्ञ एवं सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार

1 जुलाई से 5 जुलाई 2003 तक

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य अनन्त श्री विभूषित वीतराग श्रीमान् 1008 सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 117 वां जन्मोत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम, देहली गेट, अजमेर में स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री दिनांक 1 जुलाई 2003, मंगलवार से 5 जुलाई 2003, शनिवार तक बड़े हर्षोल्लास से मना रहे हैं। इस शुभावसर पर जयपुर से प्रेम प्रकाश मण्डल सहित महामण्डलेश्वर श्रीमान् 108 स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं अन्य विद्वान, संत महात्मा गुणी कलाकार पधारेंगे। उत्सव के उपलक्ष में बहुकुण्डात्मक विश्व कल्याणार्थ विष्णु महायज्ञ भी रखा गया है। उत्सव के उपलक्ष में 2 जुलाई 2003, बुधवार को बच्चों के सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम भी रखा गया है। आप सभी महानुभाव अपने इष्ट मित्रों व परिवार सहित आकर सन्तों के दर्शन कर सत्संग का लाभ प्राप्त करें एवं मानव जीवन को सफल बनावें।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कार्यक्रम ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

1. प्रतिदिन प्रातः 7 से 8 बजे तक "ॐ नमः शिवाय" का सामूहिक संकीर्तन।
2. प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक सत्संग एवं सायं 4 से रात्रि 9 बजे तक सन्तों का सत्संग व कीर्तन होगा।
3. दिनांक 30 जून 2003, सोमवार को प्रातः 7 बजे गणपति पूजन करके यज्ञ प्रारम्भ होगा।
4. दिनांक 1 जुलाई 2003, मंगलवार को प्रातः 7 बजे श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ शुभारम्भ करके हवन शुरू किया जायेगा। जो दोपहर 12 बजे तक चलेगा। 12 बजे हवन की पूर्णाहुति होगी।
5. दिनांक 2 जुलाई 2003, बुधवार प्रातः7 से 10 बजे तक 101 बच्चों के सामूहिक यज्ञापवीत (जनेऊ) संस्कार होगा। सब प्रेमी समय पर पहुँचने का कष्ट करें। सायं को 4 बजे पूज्य लाल साहिब की ज्योति प्रज्जवलित होगी। सायं 5 बजे आश्रम से भव्य शोभा यात्रा निकलेगी जो दरगाह बाजार, नला बाजार, मदार गेट, गाँधी बाजार, नया बाजार, आगरा गेट, गंज होते हुए आश्रम पर समाप्त होगी। तत्पश्चात् पल्लव पाकर ज्ञान यज्ञ का शुभारम्भ होगा।
6. दिनांक 5 जुलाई 2003, शनिवार प्रातः 6 बजे गुरु महाराज की पूजा, प्रातः 7 से 9 बजे तक हवन तत्पश्चात् ध्वजावंदन व सत्संग 11 बजे प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब का भोग व 12 बजे आम भण्डारा। सायं 4 बजे सत्संग व रात 9 बजे पल्लव के साथ उत्सव की समाप्ति।

नोट : जो बाहर के प्रेमी अपने बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार करवाना चाहें, वो फार्म मंगवाकर भरकर अजमेर भेज दें।

सेवा में :

स्वामी बसन्तराम सेवा ट्रस्ट व समस्त प्रेमी जन

पता :- स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री, प्रेम प्रकाश आश्रम, देहली गेट, अजमेर फोन : 0145-2423993, 2625416

डाक रजि. ग्वालियर संभाग-161/2003-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा.शा.रजि.–29/18/81-II

भजन

तर्ज : सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों।

टेक : सतगुरु टेऊँराम स्वामी, आए धर अवतारा।
जिनके गुण मैं गाय सकूं ना, महिमा अपरम्पारा।।

1. सिन्धु देश में खण्डू नगर इक, महा अती अभिरामा।
बाग़ बग़ीचे सुन्दर गैयां, गोकुल के सम धामा।।
घर-घर में सत्संग कर प्रेमी, जपहिं राम का नामा।
तीन तरफ से नहरें बहतीं, चतुर्थ सिन्धु धारा।।

2. बालपने से हरी भजन में, मस्त हुआ अनुरागी।
जगतर की सब इच्छा त्यागे, होया महा वैरागी।।
अपने घर को छोड़के चलिया, शुक ज्यों भया त्यागी।
सच का कर उपदेश सर्व को, संसा भरम संहारा।।

3. टण्डे आदम दक्षिण तरफ में, जंगल था इक भारी।
वहां रेत पर बान्ध के आसन, बैठा धीरजधारी।।
कथा यथार्थ निशदिन करते, सुनते सब नर-नारी।
सन्त मुसाफिर सबके लीये, खोला अखण्ड भण्डारा।।

4. ब्रह्म ज्ञान की बीन बजाकर, सबको निर्भय कीना।
दया करे निज दासनि ऊपर, दान अभय का दीना।।
पूर्ण आत्म पद पहुंचाए, जन्म मरण दुःख छीना।
धर्मराज का डर नहिं वांको, लेखा यम निवारा।।

5. दीन दयालू दीन त्राता, जीवन उबारण आया।
करम धरम से भूले थे तिस, सत्मार्ग में लाया।।
अद्भुत अपनी लीला कर फिर, निज स्वरूप सनाया।
सर्वानन्द मैं सद्वारी, जाऊँ बलि बलिहारा।।

सूचना



[illegible] सम्माननीय सदस्यों [illegible] उनके प्रेषण पते [illegible] सदस्यता क्रमांक [illegible] रखिया व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया [illegible] कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए।

व्यवस्थापक

सदस्यता क्रं.

श्रीमान

H_4832-15060-7/200
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका
अजमेर, राजस्थान

भजन

तर्ज : से सब सलि तीर्थ जानो..........

थलु : सत्‌गुरु टेऊँराम स्वामी, सभिनि सुखनि जो धाम थियो।

1. खूह मां जल सुकी व्यो जदहिं, तंहिं में जल तो जामु कयो।
ख़ाली देग में वारी विझाए, तंहिंमां सुन्दर ताम कयो।।

2. कण्डा कण्डीअ जा लगा थे जदहीं, तंहिं लसो लारे लाम कयो।
गणेशानन्द गुरु महिमा गाए, डिबु खे तीर्थ धाम कयो।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी व प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया। **सम्पादक :** शंकरलाल सबनानी, फोन : 2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 2454183